नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

सुख-शान्ति-पवित्रता से सम्पन्न दैवी विश्व के रचयिता, परमसद्गुरु भोलेनाथ शिव के अति स्नेही, अति प्रिय सन्तान भाइयो और बहनो,

पुराने और नए वर्ष के संगम की शुभ वेला में, नवयुग की स्मृतियों को ताजा करने वाले नववर्ष की, आप सभी बेदाग हीरा बनने वालों को बहुत-बहुत बधाइयाँ हों।

समय की मांग है कि हम अपने लिए बहुत अच्छा सोचें। अपने को खुशी में रखने के लिए अन्दर ही अन्दर शक्तिशाली विचारों में रमण करें। प्यारे बाबा की उम्मीदें पूर्ण करने की धुन में रहें। बाबा को सामने देखते हुए, सबसे मिलजुल करके, एक-दो की विशेषताओं को देखते हुए गुणों की माला अपने गले में डालें।

कर्म करते न्यारे रहें, परमपिता परमात्मा के लव में सदा लीन रहकर वाह-वाह बनें, निर्बन्धन, पारदर्शी, सन्तुष्टमणि, स्मृति स्वरूप बनकर समाधान करें। रहमदिल बन सर्व प्रति शुभ भावनाएँ फैलाएँ। दृढ़ संकल्प की शक्ति से असंभव दिखने वाले कार्यों को साकार कर दिखाएँ। एक-दो के साथ भाव-स्वभाव का मिलन करते हुए अलौकिक प्रेम की खुशबू फैलाएँ। हिम्मत और उल्लास के पंख देकर शक्तियों के दान का अविनाशी लंगर लगाएँ।

कल किसने देखा है, सफल कर सफलता को पा लें। एक बल एक भरोसे के आधार पर श्रेष्ठ कर्म द्वारा श्रेष्ठ संस्कार बनाएँ। पुरानी और पराई बातों को विदाई देकर निर्मल भावों के साथ नववर्ष का स्वागत करें।

स्वास्थ्य, खुशी, समृद्धि के वरदानों के साथ 'विजयी भव' के वरदान को साकार करने की अनन्त बधाइयाँ आप सब स्वीकार करें।

सर्व भाई-बहनों को नए वर्ष और नए युग की बहुत-बहुत मुबारक हो! मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन

बी.के.जानकी

अमृत-सूची

- पिताश्री का अनोखा जीवन *(संजय की कलम से)* 4
- लाल अक्षरों वाला *(कविता)* 5
- पिताश्री द्वारा बाल-कल्याण *(संपादकीय)* 6
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- श्रद्धांजलि......................9
- वाह ड्रामा वाह! 10
- बाबा कहते थे, रत्न बच्ची 13
- श्रद्धांजलि 15
- बाबा ने सूक्ष्मवतन से भेजा 16
- बाबा ने खिलाया घी और 20
- प्यारे ब्रह्मा बाबा *(कविता)* 22
- बाबा का कमरा सूक्ष्मवतन 23
- जो 16 वर्ष में न मिला.........24
- बाबा ने कहा, बहुत मीठी 25
- अंगुली पकड़कर चला रहे 26
- बीते हुए लम्हों की मधुर यादें..28
- सचित्र सेवा समाचार 30
- पहली मुलाकात में ही 32
- बाबा से सीखी हुई तीन बातें ...34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -

09414006904, 09414423949

hindigyanamrit@gmail.com

पिताश्री का अनोखा जीवन

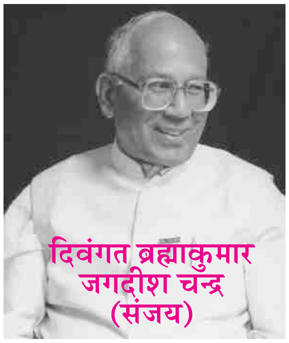

दिवंगत ब्रह्माकुमार जगदीश चन्द्र (संजय)

पिताश्री ब्रह्माबाबा 18 जनवरी, 1969 की रात्रि को व्यक्त देह त्याग कर अव्यक्त-लोक के वासी हुए थे। पिताश्री ने अनेक मनुष्यात्माओं को ईश्वरीय ज्ञान एवं दिव्य गुणों का अनमोल ख़ज़ाना दिया। कैसा उत्तम जीवन था उनका! कितने रहमदिल थे वे, हम जैसों पर कृपा-दृष्टि करके हमारे जीवन को कितना ऊँचा बनाया! किसी व्यक्ति में कितना भी बड़ा अवगुण क्यों न हो, पिताश्री उसको ईश्वरीय प्रेम से सींचकर वह अवगुण निकालने की हर कोशिश करते थे।

कितने उदारचित्त और सहनशील थे वे!

पिताश्री, 1936-37 में जब प्रभु की लगन में मगन हुए तो उन्हें परमपिता परमात्मा शिव का, विष्णु चतुर्भुज का और सृष्टि के महाविनाश का साक्षात्कार हुआ था। प्रभु-प्रेरणा को लेकर उन्होंने अपना सारा जीवन और सारी सम्पत्ति ईश्वरीय ज्ञान द्वारा आत्माओं के कल्याण के लिए लगा दी। उन्होंने विशेषकर माताओं-कन्याओं को ज्ञान-शक्ति, योग-शक्ति, पवित्रता-शक्ति से सम्पन्न करके शक्तिरूपा बनाने और भारत को पावन करने के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। कितने उदारचित्त और सहनशील थे वे! अपना तन-मन-धन इस अलौकिक सेवा में लगाने के बाद उन्हें कितना सहन करना पड़ा! संसार के लोग यह पहचान भी न सके कि पिताश्री स्वयं परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम हैं और कि वे इतने उच्च कार्य के लिए निमित्त हैं कि जिसका सुख रूपी फल एक दिन सारे संसार को मिलेगा और जिससे 21 पीढ़ियाँ पावन होंगी।

सेवा हेतु वे सोते तक न थे

कितने अथक थे पिताश्री! नब्बे वर्ष से भी अधिक आयु होने पर भी वे एक फरिश्ते की तरह स्फूर्ति से कार्य में लगे रहते। इतने जिज्ञासुओं को वे प्रतिदिन स्नेह और ज्ञान से अपने हाथों से पत्र लिखते कि हम लोग हैरान रह जाते कि क्या ये कोमल हाथ थकते न होंगे! नहीं, वे तो आत्माओं के स्नेह में आकर उनकी मार्ग-प्रदर्शना के हेतु सोते तक भी न थे और हम वत्सों को भी यही कहते कि अब सोने का समय नहीं है, अब तो सभी आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता, पतित-पावन परमात्मा शिव का सन्देश देने का समय है।

मिलने वाले उनके अपार स्नेह से पिघल जाते

वास्तव में उनका हर कर्म, उनका हर कदम लोक-सेवार्थ था। उनकी मधुर मुस्कान को देखकर उलझन में पड़े हुए मनुष्य की उलझनें तुरन्त भाग जातीं, उनकी अलौकिक आभा को देखकर लोगों के मन के प्रश्न स्वत: हल हो जाते, उनकी बैठक को देखकर ऐसा लगता कि अब विकारों पर हमारी विजय हुई कि हुई। मिलने वाले उनकी आत्मिक स्थिति, उनके वात्सल्य, उनके अलौकिक पिता-तुल्य व्यवहार, उनके अपार स्नेह से पिघल जाते और उनके मुख से स्वाभाविक रीति से 'बाबा' शब्द सम्बोधन के रूप में निकल पड़ता। उनके निर्मल जीवन, दिव्यगुण-सम्पन्न आचरण, मधुरता, सेवा-भाव को देखकर प्रत्यक्ष प्रमाण मिल जाता कि अब सतयुग आया कि आया। उनका व्यक्तित्व पारसमणि की तरह था जो लोहे को सोना बना देता। उनमें परमपिता शिव के गुणों को व्यक्त होते देख कर नास्तिक भी आस्तिक हो जाते, माया से बने पत्थर सम दिल भी पिघल जाते अथवा इस संसार-सागर से तैरने का साहस कर लेते। वे एक जागती ज्योत थे, उनके सम्पर्क में आने से बुझे दीपक जग उठते थे और तामस में भटकते यात्रियों का जीवनपथ आलोकित हो उठता। वे एक ऐसे पावर हाउस थे कि जहाँ सर्वशक्तिमान शिव आकर निर्बल आत्माओं को बल देते।

उनके कमल मुख से शिव बाबा की जब ज्ञान-मुरली बजती तो विकारों से तप्त आत्मा शीतलता का अनुभव करती और प्रभुमिलन का अलौकिक सुख पाकर पिता परमात्मा से पवित्रता का वरदान सहज ही प्राप्त कर लेती।

हाथ देकर हम सभी को खींच रहे हैं

आज वे यह कर्त्तव्य अव्यक्त लोक से कर रहे हैं। वे यहाँ साकार माध्यम में आ कर भी हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर जाते हैं और अव्यक्त रूप में तो हमें पावन बनाने तथा सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य कर ही रहे हैं। जैसे कोई ऊपर चढ़ कर नीचे वालों को अपना हाथ देकर उन्हें भी ऊपर खींच लेता है, वैसे ही हमें देह-अभिमान की खाई से निकालने के लिए और याद की मंज़िल पर पहुँचाने के लिए ही वे ऊपर अव्यक्त लोक में गये हैं और अब अव्यक्त बनाने वाली शिक्षाओं के रूप में हाथ देकर हम सभी को खींच रहे हैं।

महापरिवर्तन में समय है कम

स्वाभाविक है कि उन्होंने हमें पावन एवं दिव्यगुण सम्पन्न बनाने के लिये जो मेहनत की, वह बार-बार हमारे मन को उनकी ओर खींचती है और परमपिता परमात्मा शिव की ओर आकर्षित करती है, जिन्हें निरन्तर याद करने के लिये वे हमें सदा कहा करते थे। अब जब वे अव्यक्त देश से आकर हमें मिलते हैं या हम अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर उनसे मिलते हैं तो मन में उत्साह उमड़ पड़ता है और यही शुभ उमंग आती है कि अब हम संसार को शिव बाबा का शुभ सन्देश बड़ी तीव्र गति से देंगे क्योंकि अब समय बहुत कम रह गया है। अब सृष्टि का महापरिवर्तन बहुत ही निकट आ पहुँचा है।

वे साथ ही हैं

पिताश्री का कर्त्तव्य अब और भी तेज हो गया है क्योंकि अव्यक्त स्थिति में व्यक्त की तुलना में अधिक अबाध रीति से कार्य हो सकता है। अत: हम उनसे और भी अधिक उत्साह प्राप्त करते हैं। हमारे तो वे साथ ही हैं क्योंकि नाम उनका वही 'ब्रह्मा' ही है, रूप भी उनका वही है (केवल व्यक्त की बजाय अव्यक्त हुआ है), कर्त्तव्य उनका – पतितों को पावन बनाना है, सम्बन्ध उनका वही है, केवल उनका धाम ही बदला है परन्तु बुद्धि-बल से हम भी उस धाम में जा सकते हैं क्योंकि हम उस धाम को जानते हैं और वे भी तो इस साकार सृष्टि में, साकार माध्यम में आकर हमसे मिलते हैं। परन्तु इन ज्ञान-युक्त बातों को वही समझ सकते हैं जिनके पास ज्ञान-चक्षु है या जिनका ज्ञान-चक्षु खुला है। ❖

लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है ?

ब्रह्माकुमार अवनीश, दुबई

बिन्दु को जब याद करूँ तो ब्रह्मा भी याद आते हैं,
काश! तुम्हें देखा होता ये सोच-सोच ललचाते हैं।
साकार पालना का बाबा, वो सत्र कहाँ है?
लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है?

जैसे सबको लिखते थे, बस एक मुझे भी लिख भेजो,
इसके बदले में सतयुग की सारी पदवी ले लो।
मोबाइल पे झगड़े हैं, ना प्यार यहाँ है,
लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है?

सतयुग से ज्यादा सुख तुमसे मिलने में आता होगा!
निज हाथों से टोली पाना कितना मन को भाता होगा!
पास बुला लो हमको भी आप जहाँ हैं,
लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है?

धन्य-धन्य वो रूहें हैं जिनने तुमको देखा है,
साकार याद उनके जीवन की अटल-अमिट रेखा है।
विस्तार बहुत है दुनिया में, सार कहाँ है,
लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है?

हमने भी ठाना है तुम संग जीवन पूरा करने का,
जो भी होगा देखेंगे, उत्तरार्ध से क्या डरने का?
तुम बिन जीवन की आशा, अन्यत्र कहाँ है?
लाल अक्षरों वाला वो पत्र कहाँ है?

पिताश्री द्वारा बाल-कल्याण

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ज्ञान, पवित्रता एवं योग की साक्षात् चैतन्य मूर्ति थे और साकार जीवन में उनके सामने चाहे जैसी भी कठिन परिस्थितियाँ आईं, उनका हल करने के लिए उन्होंने सदा योगबल, पवित्रता-बल और ज्ञान-बल ही का प्रयोग किया, देह अभिमान युक्त तरीकों को उन्होंने महत्व नहीं दिया। पिताश्री ने माया, अपवित्रता अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तथा आलस्य के सूक्ष्म रूपों को बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया और माया को जीत कर जगतजीत बनने के लिए प्रैक्टिकल मार्ग-प्रदर्शना और प्रबल प्रेरणा दी। उन्होंने अपने कृत्यों द्वारा अपकारी के प्रति भी उपकार, घृणा करने वाले के प्रति भी प्रेम, निन्दा करने वाले के प्रति भी सेवा का ही पाठ पढ़ाया। अपनी सच्चरित्रता द्वारा त्याग और तपस्यामय जीवन की शिक्षा सदा दी। 'अब घर जाना है, यह संसार एक ड्रामा है, सदा शिव बाबा को याद करते हुए ही हर कार्य करना है' – यह स्मृति सदा ही उनके नयनों, वचनों तथा कार्यों से हमें मिलती थी।

अगाध ईश्वरीय प्यार

पवित्रता पिताश्री के स्वभाव में ऐसे समाई हुई थी जैसे चन्दन में सुगन्धि समाई हुई होती है और शिव बाबा से उनका इतना स्नेह था कि सूर्य-मुखी फूल का सूर्य से और चकोर को चाँद से भी इतना नहीं होता। वे सदा कहा करते, ''जब मैं भोजन करता हूँ तो भी स्वयं को शिव की सजनी मानकर अपने साजन (परमात्मा शिव) के साथ ही भोजन करता हूँ, जब मैं स्नान करता हूँ तो भी ऐसा महसूस करता हूँ कि उनके 'रथ' को नहला रहा हूँ, जब सोता हूँ तो भी उनका साथ बना रहता है। मैं उनका रथ हूँ, उनके अंग-संग रहता हूँ।'' कई बार दूसरों को सिखाने के लिए जब वे

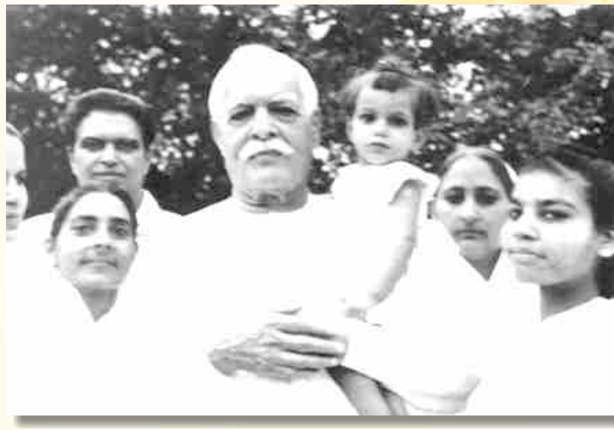

क्लास में यह बताया करते कि वे शिव बाबा से कैसे बातें करते हैं तो उस समय उनके मुखारविन्द पर शिव बाबा के स्नेह की जो रेखायें उभरतीं, नेत्रों में जो प्यार झलकता और उनके शब्दों में जैसी प्रीति भरी होती, उससे कोई कठोरतम ह्रदय वाला व्यक्ति भी प्रेम-प्लावित हुए बिना न रह सकता। सभी का मन प्रेम-विभोर हो उठता क्योंकि बाबा जो कुछ कह रहे होते वो उनके ह्रदय की गहराई से उठता। वो ऐसा पावन स्त्रोत होता कि प्रत्येक के मन के मैल को धो डालता।

समाज के हर क्षेत्र में सुधार

पिताश्री बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न थे। शिव बाबा के साथ, पिताश्री ने अपने वचनों और कार्यों द्वारा जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला और समाज के हर क्षेत्र में सुधार किया। समाज के नेताओं का जिस ओर आज ध्यान गया है, शिव बाबा और पिताश्री ने उन-उन क्षेत्रों में बहुत काल पहले से ही वह कार्य दिव्य रीति से प्रारम्भ कर दिया था। उदाहरण के तौर पर बालकों के जीवन को ही लीजिए। बच्चे तो अपने भोलेपन तथा मासूमियत के कारण सभी को प्यारे लगते ही हैं। उनकी सरलता और पवित्रता तो सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है परन्तु पिताश्री का उनसे

विशेष स्नेह था और इसका सबूत है पिताश्री के वे कार्य जो उन्होंने बच्चों के लिये किये और उनके हार्दिक उद्‌गार जो उन्होंने बच्चों के लिये व्यक्त किए।

बच्चों के प्रति दृष्टिकोण

पिताश्री बच्चों को कोमल कलियों अथवा नन्हे पौधों के रूप में देखते थे और कहते थे कि इनसे बहुत कोमलता और मधुरता से व्यवहार करने की जरूरत है। बाबा साकार रूप में भी उन्हें 'छोटा' समझ कर उनकी उपेक्षा नहीं करते थे बल्कि उन्हें बहुत ही महत्व देते थे। वे कहते थे कि छोटे बच्चों का मन साफ स्लेट की तरह होता है जिस पर 'ज्ञान' अच्छी तरह लिखा जा सकता है। इनके संस्कारों को अभी मोड़ना सहज है। वे कहते कि इन बच्चों को दिव्य साक्षात्कार भी हो सकते हैं और यदि ये सहज योग को सीख जायें तो दूसरों को भी इस मार्ग पर लगा सकते हैं क्योंकि ये 'पवित्र पौधे' हैं। बाबा उन्हें आत्मा की दृष्टि से देखते हुए कल्याण के लिए हर कोशिश करते। माता मदालसा का उदाहरण देते हुए वे कहा करते थे कि बच्चों को ज्ञान की लोरी देनी चाहिए। बाबा उन्हें 'महात्मा' की संज्ञा देते थे और कहते थे कि संन्यासी, जिन्हें लोग 'महात्मा' मानते हैं, उन्हें काम विकार का ज्ञान तो होता ही है परन्तु ये छोटे-छोटे बच्चे तो इस विषय में निर्दोष हैं और इस विकार से अपरिचित हैं। वे तो शीतलांगी हैं। अत: यदि इस अवस्था में इन्हें ज्ञान दिया जाने लगे तो अच्छा होगा, इससे इनकी पवित्रता की नींव ही सुदृढ़ हो जाएगी। इस दृष्टिकोण को लेकर इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में एक रिवाज-सा हो गया है कि यदि किसी सभा में पचास बच्चे हों तो कहा जाता है कि आज की सभा में पचास 'महात्मा' भी आये थे।

बच्चे बाबा को छोड़ने को तैयार न होते

जैसे बाबा को बच्चों से अथाह प्यार था, वैसे ही बच्चों को भी बाबा के सम्पर्क में आने से हार्दिक प्यार हो जाता था। जब मधुबन से लौटने की घड़ी आती तो वे अपनी कोमल-

कोमल भुजाओं से बाबा को लिपट जाते और उन्हें किसी भी कीमत पर छोड़ने को तैयार न होते। इधर बस छूटने का समय आ पहुँचता और उनके माता-पिता इस फिक्र में होते कि कहीं बस न छूट जाये। परन्तु बच्चे उन्हें कह दिया करते, ''आप भले ही चले जायें, हम तो यहीं बाबा के पास रहेंगे।'' आँखों में आँसू भरकर, भोली-सी सूरत से बाबा की ओर देखते और अपने पाँव पृथ्वी पर मारते हुए फैसला दे देते, ''हम तो उस नरक की दुनिया में अब बिल्कुल नहीं जायेंगे।'' ऐसा भी नहीं कि बच्चे केवल बाबा की नित्य नई 'टोली' के आकर्षण में अथवा उनके प्यार, दुलार और पुचकार के कारण ही धरना डाल देते बल्कि यदि आप उनसे पूछें, 'आत्मा' का क्या स्वरूप है, वह शरीर में कहाँ रहती है अथवा शिव बाबा का धाम कौन-सा है? तो वे प्राय: ठीक ही उत्तर देते। तब सोचिये तो इस पवित्र एवं सुखद पाण्डव भवन के वातावरण में जब वे दृढ़तापूर्वक आसन जमा लेते तब उन्हें कौन हिला सकता था?

संस्कार बदल जाते बाबा के स्नेह से

आखिर बाबा ही उन्हें अपने कोमल हस्तों से थपथपाते हुए और अलौकिक प्यार करते हुए कहते, ''मीठे बच्चे, क्या बाबा की सर्विस करने नहीं जाओगे? तुम्हारे जो सहपाठी अथवा अध्यापक हैं, क्या उन्हें शिव बाबा का परिचय नहीं दोगे? तुम तो बहुत ही अच्छे हो। जब तुम उनको शिव बाबा का परिचय बताओगे और अपना अनुभव सुनाओगे और मन, वचन, कर्म से चंचलता नहीं करोगे तो तुम बड़ों से भी अधिक ज्ञान-सेवा कर सकोगे। बच्चे, आप जैसे मीठे बच्चों को भेजने के लिए तो बाबा का मन नहीं करता परन्तु जब बाबा ही यह सेवा करने आये हैं तो आप बच्चों को भी तो यह सेवा करनी ही है ना। अत: भले ही अभी आप जाओ, घर में प्रतिदिन योग लगाओ और अपने आचरण से माता-पिता व पड़ोसियों को प्रभावित करो जिससे कि तुम्हारे माता-पिता अपने पत्र में तुम्हें सर्टिफिकेट (प्रमाण पत्र) दें और फिर तुम बहुत-से बच्चों को अपने-समान बनाकर, गाड़ी भर कर, उनका पण्डा बनकर, उन्हें यहाँ ले आओ।'' बाबा की ऐसी-ऐसी प्रेरणाप्रद बातें सुनकर बच्चे वहाँ से चल पड़ते और जाते-जाते मुड़-मुड़कर इस अलौकिक बाबा की ओर देखते और बापदादा की याद में तल्लीन-से रहते। बाबा से उनकी इतनी तो प्रीति जुट जाती कि वहाँ से जाने के बाद वे बाबा को इस प्रकार से पत्र लिखा करते – ''बाबा, अब मैं अच्छा बच्चा बन गया हूँ। अब मैं बाज़ार की चीजें नहीं खाता और मैंने लड़ना और गुस्सा करना भी छोड़ दिया है। बाबा, मुझे जो जेब खर्च के लिए पैसे मिले हैं, वो मैं गुल्लक में इकट्ठे करता जा रहा हूँ क्योंकि वो तो शिव बाबा की ईश्वरीय सेवा में लगाने हैं। बाबा, मेरे पत्र का उत्तर जल्दी देना...।'' इस प्रकार बच्चे के जो संस्कार हजार कोशिश करने पर भी नहीं मिटते थे, वे बाबा के स्नेह में यों ही ठीक हो जाते थे, यहाँ तक कि स्वयं उनके माता-पिता भी जब भी कोई भूल करते तो बच्चे कहते कि देखो बाबा ने तो ऐसा करने के लिए निषेध किया था। इस प्रकार, 'छोटे मियाँ सुबहान अल्लाह' हो जाते थे।

बच्चों की उन्नति के लिए कदम

पिताश्री ने साकार रूप में बच्चों के कल्याण के लिए जितना परिश्रम किया उतना शायद ही आज तक किसी ने किया होगा। उन्होंने न केवल वर्णमाला को आध्यात्मिक ज्ञान की पुट दी बल्कि बच्चों के लिए ज्ञान-युक्त संवाद भी बनाये। जब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना होने लगी तो भी उन्होंने बच्चों और बच्चियों के लिए स्कूल खोले जो हर प्रकार से अनुपम थे। उनमें न केवल भाषा और गणित इत्यादि का ज्ञान कराया जाता था बल्कि बच्चों को नैतिक एवं सरल आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। वहाँ बच्चों को मारना-पीटना मना था, उन्हें समझाया जाता था और उन्हें एक-दूसरे से आत्मिक नाते से व्यवहार करने की सीख दी जाती थी। उनके उठने-बैठने, खाने-पीने, बोलने-चलने और सोने के तरीकों में दिव्यता लाई जाती थी। कितने ही शिक्षा-विशेषज्ञों ने वहाँ स्वच्छता, शान्ति, अनुशासन, नैतिकता, सहयोग इत्यादि को देख भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उसमें पूर्वी और पश्चिमी पद्धतियों का समावेश था और बच्चे वहाँ एक कुल की तरह रहते थे। पढ़ाई का जीवन के साथ सम्बन्ध था और पढ़ाने वाले भी आत्म-निष्ठा के अभ्यासी तथा पवित्रता-पथ के अनुगामी थे। अपने जीवन की कमाई का एक बड़ा भाग पिताश्री ने बच्चों के बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए लगा दिया।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

‘पत्र’
संपादक के नाम

मैं पिछले कुछ समय से ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा रावतभाटा से जुड़ा हूँ। सात दिवसीय राजयोग कोर्स करने के बाद मुझे जो भी अनुभव हुआ वह चमत्कारिक है। इस कोर्स ने मेरी आँखें खोल दीं। हम कितना व्यर्थ भार मस्तिष्क पर डाल कर इसे रुग्ण बना रहे हैं। यह ऐसी पवित्र संस्था लगी जहाँ किसी धर्म की बात नहीं, किसी मन्त्र विशेष की बात नहीं, बात होती है सिर्फ संयमपूर्वक जीवन जीने की, जो आज के इस कलियुग में बहुत ही आवश्यक है। मैं अपने को हल्का महसूस कर रहा हूँ इस विश्व विद्यालय से जुड़कर। यहाँ का वातावरण परम सुखदायी है। साथ ही निमित्त बहनों का व्यवहार व ज्ञान खूब-खूब अच्छा है। परमपिता परमात्मा शिव बाबा का सतत् ध्यान रखना है, रखवाना है, यही ध्येय है। वास्तव में, जीवन में हम शील (चरित्र) का ध्यान रखेंगे तो बेड़ा पार है।

– ब्र.कु.अरुण कुमार, रावतभाटा

नवम्बर, 2015 के अंक में ‘शिक्षक ने दिखाई राह’ में हताश विद्यार्थी की बुझी दीपशिखा को पुन: प्रज्वलित करने का पुनीत कर्त्तव्य दिल को छू गया। ‘शरीर की वृद्धि व रखरखाव’ में ‘सवाल पेट का’ उपशीर्षक में जैसे ही पढ़ा कि ‘सूर्योदय से पहले गरीब का घर से बाहर निकलना जैसे ज़रूरी है वैसे ही अमीर का भी घर से निकलना ज़रूरी है’ – प्रेरणाप्रद लगा तथा तुलना के प्रति अन्दर से कृतज्ञता भाव उछला। रमेश भाई का लेख प्रश्नात्मक शैली का और शंका-समाधान करने वाला है। सम्पादकीय ‘आन्तरिक और बाहरी प्रकृति’ के द्वारा यह सीखने को मिला कि ‘अपने एक’ को कर्म द्वारा सुधारो तो दुनिया सुधर जायेगी। कल्याणकारी संगमयुग की लेखमाला के उपरोक्त सभी खुशबूदार मणकों को ढेर सारी बधाइयाँ।

– शम्भू प्रसाद, सोडाला, जयपुर

श्रद्धांजलि

बापदादा के अति स्नेही ब्रह्माकुमार रामस्वरूप भटनागर ने एयरफोर्स में नौकरी करते हुए सन् 1958 में कानपुर में युगल (दिवंगत सरोज बहन) सहित ईश्वरीय ज्ञान लिया। साकार बापदादा से आपने बहुत पालना ली और नौकरी के दौरान पूना, इटारसी आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा के निमित्त बने। आप अंग्रेजी भाषा की मासिक पत्रिका वर्ल्ड रिन्यूवल के सह-सम्पादक थे। आपकी आयु 84 वर्ष थी। आप शान्त, गम्भीर, नम्रचित्त और ईश्वरीय परिवार के स्नेही थे। आपने 19 नवम्बर, बुधवार को अमृतवेले पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। ऐसी स्नेही, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

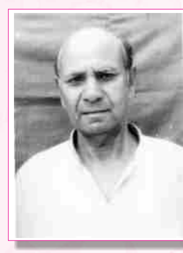

ब्र.कु.भ्राता हरिकृष्ण को ईश्वरीय ज्ञान सन् 1956 में अम्बाला कैन्ट में प्राप्त हुआ। आपने साकार मम्मा-बाबा की बहुत पालना ली। मनोहर दादी, ध्यानी दादी, कुन्ज दादी आदि का सान्निध्य भी आपको प्राप्त हुआ। आप स्वच्छता प्रिय, सदा निश्चिंत, उदारदिल और पाक कला में निपुण थे। भोलापन तथा मुस्कान आपके चेहरे पर झलकते रहते थे। आप 83 वर्ष की आयु में भी स्वस्थ और फुर्त थे। अन्तिम श्वास तक सेवारत रहे। आपकी दो सुपुत्रियाँ प्रतिभा बहन (शाजापुर) तथा मंजू बहन (बैतुल) यज्ञ में समर्पित हैं। आपने 30 अक्टूबर, सुबह 8 बजे नश्वर देह का त्याग कर बापदादा की गोद ली। ऐसी स्नेही, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

वाह ड्रामा वाह ! वाह बाबा वाह !

✻ ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुम्बई (गामदेवी)

बाबा कहते हैं, वाह बाबा वाह! वाह ड्रामा वाह! ऐसे बाबा से मिलने के लिए बाबा के बच्चे बहुत दूर-दूर से आते हैं लेकिन यहाँ आने के बाद जब बताया जाता है कि किसी कारणवश आज बाबा-मिलन नहीं होगा, तब किसी के मन में यह संकल्प आया कि वाह बाबा वाह, वाह ड्रामा वाह? बाबा नहीं भी आते, तो भी यह उद्‌गार किसी के मन में आये कि वाह ड्रामा वाह, वाह बाबा वाह! गुजराती के कवि नरसी मेहता की पत्नी ने जब शरीर छोड़ा तो उन्होंने कहा कि अच्छा हुआ जो समस्या गई। इस प्रकार सकारात्मक व नकारात्मक दृष्टिकोण हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में वाह ड्रामा कहेंगे तो वह सकारात्मक विचार है और Why Drama? अरे क्यों हुआ, कैसे हुआ, यह कहना अर्थात् वह नकारात्मक विचार है। बाबा नहीं भी आते हैं तब भी कहना कि वाह ड्रामा वाह। हकीकत में जब हम देखते हैं तो पाया जाता है कि 'वाह ड्रामा वाह' यह केवल थ्योरी में रहता है, प्रैक्टिकल में नहीं होता है। कोई स्टूडेन्ट सारा साल पढ़ाई पढ़े और अगर परीक्षा के समय पर फेल हो जाये तो उसे क्या कहेंगे? गुजराती में कहते हैं कि सारा समय घोड़ा अच्छे से चलता है पर दौड़ के समय ही नहीं चलता तो इसे क्या कहेंगे? इस प्रकार बाबा के हर कार्य को देखते हुए या ड्रामा की हर सीन देखते हुए हमारे मन से यह निकलता है कि वाह ड्रामा वाह या प्रश्न आता है कि यह क्या हो गया? अगर हमारे मन से यह नहीं निकलता कि वाह ड्रामा वाह, इसका अर्थ है, हमारी अवस्था अभी तक उतनी परिपक्व नहीं बनी है। ड्रामानुसार जो भी होता है उसको उसी रूप में स्वीकार करने के लिए हम तैयार हैं? ये बहुत गुह्य बातें हैं।

ब्रह्मा बाबा के साथ रमेश भाई और ऊषा बहन

मैं आज बाबा के लौकिक जीवन की बातें बता रहा हूँ। बाबा के जीवन में ड्रामानुसार बहुत-सी परिस्थितियाँ आईं। अच्छी भी आईं, बुरी भी आईं, ऊपर-नीचे वाली भी आईं परन्तु बाबा ने उन परिस्थितियों में भी अपनी स्थिति बनाई। परिस्थिति के अन्दर अपनी स्थिति को सम्भालना बहुत बड़ी बात है। हरेक के सामने परिस्थितियाँ तो आयेंगी ही परंतु उनमें अपनी स्थिति सम्भालना, एकरस रखना तथा स्थितप्रज्ञ अवस्था बनाये रखना इसे ही 'वाह ड्रामा वाह' की स्थिति कहेंगे। उस प्रकार की स्थिति अगर अभी तक भी हमारी नहीं बनी तो ज्ञान को सुनने का तथा समझने का क्या अर्थ है? एक बार मैंने शिवबाबा को कहा, ''बाबा, आपने बहुत बड़ी गलती कर दी।'' तो बाबा ने कहा कि बच्चे आप मेरी गलती निकालते हो? मैंने कहा, ''हाँ बाबा, आपने दो कान दिये हैं इसलिए एक कान से जो ज्ञान सुना

जाता है वह सीधा दूसरे कान से बह जाता है और दूसरे कान से जो ज्ञान जाता है वह पहले कान से निकल जाता है, बुद्धि में जाता ही नहीं। अगर एक कान होता तो ज्ञान अन्दर जाता और हम परिपक्व बन जाते। हम परिपक्व बनते ही नहीं, आगे बढ़ते ही नहीं तो हम कोल्हू के बैल के मुआफिक घूमते ही रहते हैं। कोल्हू के बैल को फुर्सत ही नहीं रहती, वह वहीं का वहीं घूमता ही रहता है। उसी प्रकार हम भी लौकिक प्रवृत्ति में ही फँसे रहते हैं, परिपक्व बनते नहीं, परिवर्तन नहीं करते, फलस्वरूप उन्नति नहीं कर पाते हैं। तो फिर ज्ञान का अर्थ क्या हुआ? इसलिए मैं ब्रह्मा बाबा के लौकिक जीवन की बातें सुना रहा हूँ।

हीरा व्यापारी के रूप में ब्रह्मा बाबा

आपने भी बाबा की जीवन कहानी पढ़ी ही होगी। ब्रह्मा बाबा का लौकिक जन्म अविभाजित भारत के हैदराबाद-सिंध (अब पाकिस्तान) में हुआ। सबसे पहला परिवर्तन क्या हुआ? बाबा को हैदराबाद छोड़ना पड़ा, कराची आये और कारोबार सीखने के लिए उन्हें मुम्बई जाना पड़ा। वहाँ से परिचित लोगों के सम्पर्क से वे कलकत्ता गये, वहाँ उन्होंने नौकरी शुरू की। तो पहला परिवर्तन हुआ कि अपनी जन्मभूमि को छोड़ना पड़ा। बाबा ने कलकत्ते में डायमण्ड मर्चेन्ट के पास सेल्समैन के रूप में नौकरी शुरू की जिसमें बाबा का पगार 17 रु. था और जो भी बेचते थे उस पर उन्हें 2% कमीशन मिलता था। बाबा का एवरेज पगार 23 रु. था। सारे साल का कमीशन बाबा को 72 रु. मिला था। बाबा के जीवन की शुरूआत 23 रु. की आमदनी से हुई थी। उस दुकान के मालिक का मुनीम सेवकराम था। बाबा और सेवकराम ने मिलकर हीरे का व्यापार शुरू किया। इस कारण बाबा कई राजा-महाराजाओं के सम्पर्क में आये, ड्रामा ने यह एक टर्न लिया जो बहुत अच्छा था।

बाबा के लौकिक में 2 बेटे और 3 बेटियाँ थी। बाबा के बड़े बेटे किशनचंद की शादी की बात आई। बाबा बृजइंद्रा दादी के लौकिक परिवार को जानते थे। बृजइन्द्रा दादी का नाम राधिका था। बाबा अपने बेटे की शादी राधिका से कराना चाहते थे इसलिए बाबा ने राधिका के भाई को कलकत्ते में अपनी दुकान पर बुलाया और उन्हें सब ज्वैलरी दिखाई कि यह उस राजा के लिए बनाई, यह उस रानी के लिए बनाई। इस प्रकार बृजइन्द्रा दादी के भाई को बाबा ने प्रभावित किया। बाबा डायमण्ड खरीदता था और डायमण्ड के पैसे 6 महीने से एक वर्ष में उस व्यापारी को देने होते थे। बाबा की ज्वैलरी बहुत अच्छी होती थी जो बनने से पहले ही बिक जाती थी। फिर बाबा उस पैसे को ब्याज पर देते थे। इस प्रकार व्यापारी सर्कल में बाबा की इज्जत बहुत बढ़ गई थी। यह सब देखकर उनका भाई खुश हुआ और उसने अपने पिताजी वश्यामल आसुमल जो सिंध-हैदराबाद के बहुत नामीग्रामी व्यक्ति थे, को कहा कि मेरी बहन की शादी होगी तो दादा लेखराज के बेटे किशनचंद से ही होगी। यह भी अच्छा परिवर्तन हुआ।

उसके बाद बाबा के तन में शिवबाबा की प्रवेशता हुई। उसके कारण बाबा फिर बनारस गये, वहाँ से सिंध हैदराबाद आये और ज्ञान देना शुरू किया। बाबा ने पहले अपने घर में अर्थात् जशोदा भवन के 10 बाई 10 के कमरे में ज्ञान देना शुरू किया। फिर वह कमरा छोटा पड़ गया तो एक दीवार तोड़कर 20 बाई 10 के कमरे में सत्संग शुरू किया, सत्संग की वृद्धि होने लगी तो फिर एक दीवार तोड़ी और 30

बाई 10 के बड़े कमरे में ज्ञान देने का कार्य शुरू किया और फिर वह भी छोटा पड़ गया तो फिर कंपाउण्ड में क्लास कराना शुरू किया। फिर बाबा ने अपने पार्टनर को लिख दिया कि मैं अभी कलकत्ता वापिस नहीं आऊंगा इसलिए तुमको हमारे बिजनेस में से जो मुझे देना है वह दे दो। इस पर सेवकराम ने बाबा को लिखा कि धन्धे में जो कैश है और जो जेवर बिक गये हैं, उनका पैसा मैं ले लूंगा और दुकान में जो भी हीरे, सोना या जेवर हैं या चांदी है वह सब मैं आपको दे देता हूँ। इस प्रकार उसने बाबा के साथ धोखा किया। बाबा ने कम दाम वाली ज्वैलरी ले ली और उसने खुद ज्यादा पैसा लिया और इस प्रकार बाबा ने ड्रामा कहकर छोड़ दिया। आजकल हमारे जैसे लोग कोर्ट में जाकर केस करते हैं कि इसने इतना लिया, मुझे इतना ही दिया परंतु बाबा ने ऐसा नहीं किया, ड्रामा कहकर निश्चिंत हो गये अर्थात् बाबा ने ड्रामा को स्वीकार किया। उसका फायदा क्या हुआ? बाबा ने डायमण्ड रख लिये और जैसे-जैसे जरूरत पड़ती गई, बाबा विश्वकिशोर भाऊ को कलकत्ते भेजते रहे और हीरे बिकवाते रहे। दिन-प्रतिदिन उनकी कीमत बढ़ती ही गईं। उस समय एक गिन्नी की कीमत 9 रु. थी जिसकी आज की कीमत 20-25 हजार है। जब बिजनेस का बँटवारा हुआ तब बाबा के हिस्से में कम दाम के जेवर आये पर जेवरों का दाम बढ़ता गया। सेवकराम का कैश, कैश ही रह गया अर्थात् उसको नुकसान हुआ। बाबा के इस धन के आधार पर ही यज्ञ की स्थापना भी हुई और 300-400 बच्चों की पालना भी। बाबा पर कोर्ट केस किये गये। मम्मा को भी कोर्ट केस के लिए जाना पड़ा। उसमें कई केस जीते और कई हारे। अठारह वर्ष से कम उम्र वाली कुमारियों को अपने लौकिक घर में वापिस जाना पड़ा और 18 वर्ष से ऊपर वाली कन्याओं को यज्ञ में रहने को मिला। इस प्रकार से कोर्ट में कई खट्टी-मीठी बातें हुई। ड्रामा का खेल चलता रहा।

मातेश्वरी को जब बाबा ने पहली बार देखा तो बाबा ने उन्हें परख लिया और मातेश्वरी जी भी सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि होकर यज्ञ में समर्पित हो गई। इस प्रकार यज्ञ बढ़ता रहा। हैदराबाद की सिंधी कम्यूनिटी के लोग बहुत तंग करते थे लेकिन ड्रामा को स्वीकार करते हुए बाबा कराची में चले गये। ड्रामानुसार बाबा ने कराची में कोई भी मकान खरीदा नहीं, केवल किराये पर रहे। ड्रामा ने बाबा को मदद की। जब पाकिस्तान से भारत आये तो उन्हें किराये के मकान छोड़ने सहज हुए। कराची में आना ड्रामा का एक टर्न था। कराची में अपना मकान होता तो नुकसान हो जाता। पाकिस्तान सरकार ने बाबा को कहा कि आप यहाँ ही रहो क्योंकि आप फरिश्ते हो। परंतु जो बहनें-मातायें थी उनके रिश्तेदारों ने कहा कि आपको भारत आना ही पड़ेगा। मनमोहिनी दीदी के चाचा मूलचन्द जी ने बाबा को ऑफर किया कि स्टीमर से कराची से ओखा तक आने का और ट्रेन से आबू आने का आपका पूरा खर्चा मैं करूँगा लेकिन आबू आने के बाद मूलचन्द जी ने कहा कि मैं आपको खर्चा नहीं दूंगा। यह तो मैंने आपको भारत लाने के लिए कहा था। बाबा ने ड्रामा के अनुसार यह बात भी स्वीकार की। आबू में ठंड बहुत थी, यहाँ का पानी भी बहुत भारी था इसलिए सबकी तबीयत बहुत खराब हुई लेकिन बाबा ने सभी की अच्छी से अच्छी पालना की। बहुत परीक्षायें आई। बृजकोठी भी जब सरकार की हुई तो वह भी छोड़नी पड़ी। फिर भरतपुर कोठी और फिर कोटा हाउस में रहे, इस प्रकार परीक्षायें भी ड्रामानुसार आती रही और बाबा ड्रामा पर अटल निश्चय बुद्धि बनकर उन्हें पार करते गये।

प्यारे बाबा के जीवन के इतने अनुभव जानकर, उनसे इतना ज्ञान सुनने तथा योग लगाने के बाद भी अगर हम ड्रामा की सीन देखते हुए हिल जाते हैं, हमारी स्थिति डाँवाँडोल हो जाती है तो क्या फायदा? अत: हम ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा बच्चों को ड्रामा के हर सीन को देखते हुए अपनी अवस्था अचल, अडोल, साक्षीद्रष्टा और स्थितप्रज्ञ बनाने का पुरुषार्थ करना है। **(क्रमश:)**

बाबा कहते थे, रत्न बच्ची है ज्ञान-रत्नों की खान

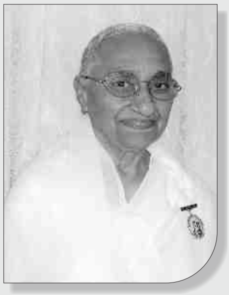

राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका हैं। आप राजयोगा एज्यूकेशन एंड रिसर्च फाउन्डेशन के अन्तर्गत युवा प्रभाग की अध्यक्षा और राजस्थान ज़ोन प्रभारी भी हैं। आपकी अध्यक्षता में ही समस्त टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रमों का संचालन होता है। नब्बे वर्ष की आयु में भी आपका तन–मन युवाओं जैसे ओज और तेज से दीप्त है। आप हँसमुख, बेहद मिलनसार, सर्व के दिलों की बात सुनने वाली, समाधान देने वाली तथा क्षण–क्षण ईश्वरीय सेवा में सफल करती हैं। हाल ही में गुलबर्गा यूनिवर्सिटी तथा सेन्ट पीटर्सबर्ग (रशिया) की एक यूनिवर्सिटी ने आपको डी.लिट से नवाज़ा है। भारत के कोने–कोने में ईश्वरीय सन्देश देने के साथ–साथ आपने विश्व के अनेक देशों में अपनी आध्यात्मिक रोशनी फैलाई है। प्यारे ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के दिव्य कर्त्तव्यों को साकार नेत्रों से बाल्यकाल से निहारने वाली आप पद्मापद्म भाग्यशाली दादी हैं। अपनी दिव्य स्मृतियों के खजाने में से कुछ अनुपम मोती पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रही हैं .... – सम्पादक

मेरा जन्म सन् 1925 में हैदराबाद-सिन्ध के एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। माता-पिता के भक्ति के संस्कार के प्रभाव से बचपन से ही मुझे भक्ति-पूजा का शौक था। जब मैं 10 वर्ष की थी तो अचानक मेरे लौकिक पिता का देहान्त हुआ जिससे माताजी अत्यन्त दुखी थीं। घर में अशान्त वातावरण व्यापक था।

साक्षात्कार द्वारा दिव्य जन्म

एक दिन दीदी मनमोहिनी जी की लौकिक माँ क्वीन मदर, जो मेरी चाची लगती थी, हमारे घर माताजी से मिलने आयीं। माताजी के दुखी और अशान्त जीवन को देखकर क्वीन मदर ने कहा कि यहाँ पड़ोस में दादा के घर बहुत अच्छा सत्संग चलता है, वहाँ जो जाता है, दुनिया के सब दुख भूल जाता है। क्वीन मदर के आग्रह से दूसरे ही दिन मैं और लौकिक माताजी दादा के घर सत्संग करने गईं। वहाँ जाते ही जब मैंने दादा अर्थात् ब्रह्मा बाबा को देखा तो बाबा का शरीर गुम होकर विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ लेकिन वो स्वप्न नहीं था वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु रूप दिखाई दिए थे। उसी समय से मेरा झुकाव ओममंडली की तरफ हो गया।

मेरी लगन निशिदिन चढ़ती कला में थी। मैं लौकिक पढ़ाई छोड़ना चाहती थी लेकिन बड़े भाई की तीव्र इच्छा थी कि पढ़ाई में आगे बढ़कर कोई अच्छी डिग्री प्राप्त करूँ। सत्संग में रुचि बढ़ने के कारण मैंने नवीं कक्षा की परीक्षा के बाद ज़िद्द की कि मुझे पढ़ना ही नहीं है। फिर भी भाई ने बनारस यूनिवर्सिटी में प्रवेश दिलाने के लिए बहुत प्रयास किया लेकिन प्रवेश नहीं मिला। मैं खुशी में नाचती थी कि सचमुच मुझे ईश्वर ने मदद की। वैसे मैं पढ़ाई में बहुत होशियार थी जिससे सदा क्लास में मेरा नम्बर आगे रहता था। ईश्वरीय ज्ञान मिलने के बाद मुझे अनुभव होने लगा था कि मैं अभी लौकिक घर की नहीं रही लेकिन ईश्वर की ही हो गई हूँ। कुछ ही समय बाद मैंने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ अर्पित कर दिया और समर्पित जीवन बिताने लगी।

बाबा ने हमें शिक्षाओं से सजाया

बाबा हम छोटे बच्चों को हर बात बड़े प्यार से सिखाते थे। मुझे याद है कि गलती होने पर भी बाबा ने हमें कभी डाँटा नहीं। प्यार के सागर बाप ने बड़े प्यार से राजकुमारी

थे जिससे फरिश्तेपन की स्थिति का तथा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होता था। मैं वो ही शक्ति हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा होती है, ऐसा स्वयं को अनुभव होता था।

बाबा हमें भविष्य में आने वाली घटनाएँ सुनाते थे कि कैसे विनाश होगा, कैसी भयानक परिस्थितियाँ पेपर के रूप में सामने आयेंगी और कैसे उस समय आपको शक्तिशाली अचल-अडोल स्थिति रखनी होगी। हम योग की भट्ठी में विशेष मौन भी रखते थे जिससे हमें

की तरह हमें पालना दी। शिक्षाएँ भी बहुत प्यार से समझाते थे जिन्हें हम सहर्ष स्वीकार करते थे। मैं सदा अपने पर ध्यान रखती थी कि मुझसे कभी भी ऐसा काम न हो जो बाबा को पसंद न हो। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा बाबा खुद करके सिखाते थे। बाबा को देखकर हम भी चाहे कर्मणा, चाहे वाचा, छोटी-बड़ी सेवा बड़े प्यार से करते थे। मेरा सदा लक्ष्य रहता था कि मुझे इस बेहद के अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में सम्पूर्णतया स्वाहा होना है।

ज्ञान सागर से मोती चुगना

बाबा प्रात: क्लास में जब मुरली सुनाते थे तो मैं चात्रक की तरह एक-एक ज्ञान रत्न बुद्धि रूपी झोली में जमा करती थी। जब यज्ञ सेवा से निवृत्त होती थी तो बगीचे में एकान्तवासी बनकर ज्ञान रत्नों की गहराई में जाकर मनन का आनन्द लेती थी। उस मनन के आनन्द में मग्न अवस्था अनुभव करके बाबा की याद रूपी झूले में झूलती थी। मनन करने से मेरी ज्ञान में रुचि बढ़ती गई। कई बार तो बाबा कहते थे, ''रत्न बच्ची, तू तो है ही रत्नों की खान।''

कठिन तपस्या

हम आत्माओं को शक्तियों से तथा गुणों से सम्पन्न बनाने के लक्ष्य से खास वतन से शिव बाबा ने तपस्या अर्थात् भट्ठी का प्रोग्राम भेजा। भट्ठी में हम दिन-रात योगाभ्यास करते थे। कभी-कभी 4-4 या 8-8 घंटे भी तपस्या करते

योगाभ्यास में सुन्दर अनुभूतियाँ होती थीं। भट्ठी में स्वर्गिक जीवन के अनोखे दृश्य भी दिखाई देते थे जिससे बुद्धियोग पुरानी दुनिया से स्वत: ही हटता जाता था। बाबा ने 14 वर्ष की कालावधि में जो तपस्या कराई, जीवन में मददगार बन गई, उससे योग हमें अति सरल अनुभव होने लगा।

तुम शक्ति अवतार हो

योगाभ्यास कराते समय बाबा हमें अपनी शक्तियों की पहचान देते थे। बाबा कहते थे, ''तुम शिव शक्तियाँ हो... तुम शिव शक्ति अवतार हो... तुम्हारे में असीम शक्तियाँ हैं....तुम ही असुर संहारिणी देवियाँ हो... तुम्हें इस कलियुगी पतित मनुष्यों की आसुरी वृत्तियों का संहार करना है और विश्व में नई क्रांति लानी है...।'' ऐसे शक्तिशाली महावाक्य उच्चारण कर विभिन्न शक्तियों का अनुभव कराके बाबा ने शक्तिशाली बनाया। कभी हम समुद्र किनारे एकान्त में जाकर रेत के ढेर पर 'स्वयं को विश्व के मालिक या बेहद के मालिक समझ इस पुरानी सृष्टि को हमें ही स्वर्ग बनाना है', ऐसी रूहानी मस्ती में लम्बे समय तक बैठते थे।

भारत के विभाजन के बाद सन् 1950 में हम सभी भाई-बहनें भारत में आये। सन् 1952 में बाबा ने अन्य आत्माओं का जीवन दिव्य बनाने की सेवा के लिए भारत के

अन्य स्थानों पर जाने के लिए हमें प्रोत्साहित किया।

बाबा ने ज्ञान रत्नों का दान करना सिखाया

बाबा सदैव कहते थे, बच्चे, एक-एक ज्ञान रत्न अमूल्य है, जो इन्हें धारण करेगा, कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाएगा। जितना तुम महादानी बनकर अनेकों को ये खजाना बाँटोगे उतना ही ये वृद्धि को पायेगा और अनेकों की दुआएँ तुम्हें आगे बढ़ायेंगी। ऐसा समझाते हुए बाबा हमें 'कैसे सफलतापूर्वक सेवा करें' इसकी विशेष ट्रेनिंग देते थे। भारत में विशेष मुझे दिल्ली, इलाहाबाद, कोलकाता, पटना इत्यादि स्थानों पर बड़े-बड़े सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, मेलों आदि का आयोजन करने की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बेगरी पार्ट ने निश्चय की नींव मजबूत की

सदा हर परिस्थिति में हमारा निश्चय मजबूत रहे, इसके लिए बाबा हमें प्रेरणा देते थे। बेगरी पार्ट के दौरान हमें कुछ भी अजीब नहीं लगा क्योंकि बाबा स्वयं हमारे साथ थे। वह समय भी बाबा की छत्रछाया में सुखपूर्वक बीत गया। बाबा हम बच्चों को सदा खुश रखते थे ताकि किसी भी परिस्थिति का हम पर प्रभाव न पड़े। बाबा हम बच्चों को ऐसे खिलाते-पिलाते रहे जिससे हमें बेगरी पार्ट का पता भी नहीं चला। बाबा के चेहरे पर कभी भी चिन्ता नहीं दिखाई दी। आर्थिक अभाव होने पर भी 350 बच्चों को कैसे खिलाऊँ, यह बाबा ने सोचा ही नहीं। एक ही निश्चय पर ब्रह्मा बाबा अटल थे कि यज्ञ शिव बाबा का है, स्वयं ही वो अपने बच्चों को सम्भालेगा। वास्तव में तो यह बेगरी पार्ट नहीं था बल्कि हम शक्तियों को बलवान बनाने का साधन था, उससे हम अधिक शक्तिशाली बने। हमें कभी भी ख्याल नहीं चला कि अब क्या होगा!

विदेश सेवा की धूम

सन् 1954 में, मैं, दादी प्रकाशमणि जी और आनन्द किशोर दादा, जापान में होने वाले 'विश्व शान्ति सम्मेलन' में निमन्त्रण पर सेवार्थ गये थे। वहाँ कई भारतवासी भाई-बहनों को शिव बाबा का सन्देश देकर धूमधाम से सेवा की। सेवा की सराहना करते हुए एक संस्था ने 2000 कल्प वृक्ष के सुन्दर चित्र छपवाकर दिये थे जिन्हें भारत में सेवार्थ लाये। जापान से हम हाँगकाँग, सिंगापुर और पेनान में निमंत्रण पर गये। वहाँ भी बाबा का संदेश देकर हजारों आत्माओं की सेवा की। जब हम विदेश सेवा से भारत वापस आये तो बाबा ने बड़े प्यार से, बहुत ही उमंग-उल्लास से स्वागत किया था। बाद में सन् 1972 से 1974 तक मैं लंदन सेवाकेन्द्र की संचालिका रही। अभी मधुबन तपोभूमि पर बाबा की सेवा में उपस्थित हूँ।

अब तक की सारी जीवन-यात्रा ईश्वर की छत्रछाया में व्यतीत हुई है। हमें अपने भाग्य को निहार कर हर्ष होता है कि भक्तिकाल में किये गये पुण्य कर्मों का प्रत्यक्ष फल यह मिला कि हम इस अन्तिम जन्म में भगवान के साथ रहे। उनकी श्रेष्ठ पालना में पले, उनकी ही मार्गदर्शना में हमारा जीवन आगे बढ़ा और अब भी निशिदिन उन्हीं की ही प्रेरणाओं अनुसार उन्नति को पा रहे हैं। अब तो मन में यही शुभकामना है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करके धरती पर आये भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अन्धकार में भटकती हुई करोड़ों आत्माएँ अपने प्राण प्यारे प्रभु से मिल सकें। ❖

श्रद्धांजलि

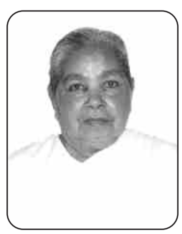

प्यारे बापदादा की लाडली, मधुबन वरदान भूमि में करीब 40 वर्षों से समर्पित रूप से निवास करने वाली सुदेश बहन, जो पहले मधुबन की डिसपेंसरी में अपनी सेवायें देती रही, विशेष आपने दीदी मनमोहिनी जी की पालना ली। फिर काफी समय तक ओम्शान्ति भवन में गाइड रूप में सेवायें देती रही। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। दिनांक 3-12-2015 को सवेरे 6.00 बजे आप पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। ऐसी स्नेही, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

बाबा ने सूक्ष्मवतन से भेजा निमंत्रण

✻ ब्रह्माकुमारी विद्या, कानपुर

उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में अयोध्या के निकट एक छोटे-से गाँव में सन् 1942 में मेरा जन्म हुआ। पिताजी आर्यसमाजी विचारधारा के थे, मूर्तिपूजा के विरोधी थे। दादी जी ऊँचे दर्जे की भक्तिन थी और हम बच्चे भी दादी से मिले संस्कारों के अनुसार मूर्तिपूजक थे। पिताजी तरह-तरह के तर्क देकर हमें समझाते पर फिर भी हमारी भावना में कोई अन्तर नहीं आता था।

लखनऊ में मेरे एक चाचा, ब्र.कु.राजेश्वर भाई के साथ ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाते थे। सन् 1959 में एक बार वे पिताजी को भी वहाँ ले गए। दादी शान्तामणि ने उन्हें ज्ञान का कोर्स करवाया और उन्हें निश्चय हो गया कि भगवान धरती पर आए हुए हैं। उस समय ब्रह्माकुमारीज के केवल 9 सेवाकेन्द्र थे।

घर में चालू हो गई क्लास

उन्हीं दिनों मम्मा लखनऊ में आई और हमारे पिताजी को उनसे मिलने का सौभाग्य मिला। मम्मा ने क्लास में हाथ उठवाया कि बाबा का ज्ञान फैलाने के लिए कौन बच्चा सेवा के लिए निकलेगा? बहुत थोड़े भाई-बहनों के बीच पिताजी ने हाथ उठाया। मम्मा ने उन्हें क्लास के बाद मिलने को कहा। मिलने पर मम्मा ने परिवार के बारे में सारी जानकारी ली। पिताजी ने सब सच बताया। सारी स्थिति को जानकर मम्मा ने कहा, ''अभी तो आपके बच्चे छोटे-छोटे हैं, आप बाहर नहीं निकलो, अपने बच्चों को ज्ञान सुनाओ। बच्चे ही बाहर निकल कर सेवा करेंगे।'' पिताजी बोले, ''मैं ज्ञान कैसे सुनाऊँ?'' मम्मा ने झाड़ और त्रिमूर्ति के दो चित्र दिये तथा एक मास की मुरली भी साथ में दे दी परन्तु मुरली पढ़ लेने पर पुनः नई मुरली लेनी हैं, लखनऊ सेन्टर से कनेक्शन रखना है आदि कुछ भी न उन्हें बताया गया, न उन्होंने पूछा। पिताजी घर पहुँचे और हमें बताया कि 'भगवान आ गये हैं और वे सृष्टि को स्वर्ग बना रहे हैं।' उस समय जितना ज्ञान उनको मालूम था, सब हमको बता दिया और फिर पूछा, ''जगदम्बा सरस्वती ने कहा है कि अपने घर में ज्ञान सुनाओ तो बताओ कौन ज्ञान सुनेगा?'' हम सब बच्चों ने हाँ भर दी। हमने घर में एक कमरा खाली करके उसको बाबा का कमरा बना दिया। मम्मा के दिये हुए दो चित्र लगा दिये, नीचे चादर बिछा दी और वहाँ बैठकर हम सब हर रोज़ मुरली सुनने लगे। इस प्रकार क्लास चालू हो गयी।

सूक्ष्मवतन से बाबा ने दिया सन्देश

महीने बाद मुरली खत्म होने पर मुख्यालय के पते (पोकरन हाउस, पाण्डव भवन, आबू पर्वत) पर बाबा को पत्र लिख दिया जिसमें मुरली सुनने-सुनाने की पूरी जानकारी के साथ मुरली खत्म होने के बारे में भी लिखा। बाबा ने तुरन्त मुरली का पैकेट खत के साथ भेजा। वाह रे वाह! हम बन गए बाबा के और बाबा हो गया हमारा!! बस, और क्या चाहिए? एकदम मन में खुशी छा गई। हमारी छोटी बहन चौदह साल की थी, उसका ट्रान्स (ध्यान में जाने) का पार्ट खुल गया। वो दिव्य दृष्टि से देखी हुई सूक्ष्मवतन की बातें बताने लगी जिनमें मम्मा का, साकार बाबा का, अव्यक्त बाबा का, स्वर्ग का वर्णन होता था। एक साल के बाद बाबा का कानपुर में आने का प्रोग्राम बना। चूंकि हमारा किसी भी नजदीकी सेवाकेन्द्र से कनेक्शन नहीं था इसलिए सूक्ष्मवतन से ही बाबा ने हमको बताया, ''साकार में मुझ से मिलना है तो कानपुर में आ

जाओ''। बाबा ने पता (Address) भी बताया कि कानपुर में कहाँ आना है। हम सब बाबा को साकार में मिलने के लिए तैयार हो गये।

बाबा ने सन्देशी को रास्ता बताया

नया ज्ञान और उसकी नई धारणाएँ देख गाँव वालों ने विरोध करना शुरू कर दिया था। क्लास में आने वाले कई भाई-बहनें भी बाबा से मिलने को तैयार हो गए। हमारा तो पूरा परिवार ज्ञान में था पर दूसरों के लिए परीक्षा की घड़ी थी। कानपुर जाने के लिए गाँव से बाहर कैसे निकलें, यह सवाल था। गाँव से तीन किलोमीटर दूरी से एक बस मिलती थी। बस तक जाने के लिए बैलगाड़ी करनी होती थी। आखिर तय हुआ कि ध्यान में जाकर बाबा से पूछा जाए। इसके लिए सन्देशी (निमित्त बहन) ध्यान में गई। बाबा ने बताया, ''सबको ले चलो। तैयारी पूरी रखो, रात को नौ बजे दूर वाले स्टेशन से ट्रेन पकड़कर निकलो।'' बाबा ने जो रास्ता बताया वो लम्बा तथा खतरों से खाली नहीं था। जनवरी महीने की सर्दी के दिन, उस पर हल्की-हल्की बूँदें भी पड़ जाया करती थी। लेकिन उमंग-उत्साह से सबने डबल-डबल कपड़े पहन लिये और कुछ कपड़े थैलों में भरकर साइकिल के हैण्डल पर टांग लिये ताकि ठीक से पैदल चल सकें। हमें बाबा ने जो रास्ता बताया था उसमें पैंतीस किलोमीटर पैदल चलने के बाद ट्रेन पकड़नी थी। बाबा ने इस स्टेशन से आने को इसलिए कहा ताकि वहाँ आकर ढूँढ़ने की बात गाँव वाले सोच भी नहीं सकें।

एक-एक से पूछताछ

उन दिनों गाँव में देवी के मंदिर में भागवत का पठन हो रहा था। रात्रि नौ बजे आरती की समाप्ति का समय था इसलिए सब उसमें व्यस्त थे। बाबा ने उसी समय निकलने को कहा था इसलिए कोई भी हमें जाते हुए देख न सका। सुबह कोई बस स्टेशन पर तो कोई रेलवे स्टेशन पर ढूँढ़ने गए। हमारे घर पर ताला देख कुछेक ने यह भी अनुमान लगाया कि हम ही सबको कहीं लेकर गए हैं। पूरी रात चलते-चलते, बाबा के बताये स्टेशन से ट्रेन पकड़कर हम लखनऊ आए। लखनऊ से हमने चाचाजी को साथ लिया, फिर कानपुर पहुँचे। वहाँ हमें कोई भी पहचानता ही नहीं था अतः बाबा से साकार में मिलन बड़ा मुश्किल प्रतीत होने लगा था। हम में से एक-एक से पूछताछ होने लगी कि आप लोग कौन हैं, कहाँ से आये हैं, किसलिए आये हैं। हम तेरह लोग थे। जब हमने बताया कि बाबा से मिलने आये हैं तो पूछा गया, ''तुमको किसने बताया कि यहाँ बाबा आये हुए हैं?'' हमने कहा, ''ऊपर से, ट्राँस से बाबा ने बताया है।'', इस बात पर कोई विश्वास ही न करे।

भगवान ने दबाए थे द्रौपदी के पैर

जहाँ बाबा-मम्मा ठहरे थे वहाँ कोठी के बाहर लॉन में हमारा सारा दिन बीत गया। बाबा से मिलने पर कड़ी निगरानी थी। हम बाबा की गतिविधियाँ दूर से देखते रहे, क्लास सुनते रहे लेकिन अन्दर पाँव नहीं रख पाये। सभी हमें वापिस जाने के लिए कहने लगे लेकिन हम दृढ़ रहे कि ''हमको तो बाबा ने बुलाया है, अगर बाबा कह देंगे कि हम नहीं मिलेंगे तो हम चले जायेंगे।'' इतना दृढ़ निश्चय था बाबा पर जो सुबह दस बजे के पहुँचे हम रात के दस बजे तक बैठे रहे! भोजन जैसे सब खा रहे थे, हमने भी खा लिया। जब बाबा-मम्मा रात की क्लास के लिए बैठे तब बड़ी दीदी ने उन्हें बताया कि ''बाबा, एक ग्रुप आया है, वो कहता है कि आपने ध्यान में उन्हें अपना कानपुर आने का प्रोग्राम दिया है।'' बाबा ने फौरन कहा, ''हाँ, बुलाओ उन्हों को।'' फिर किसी ने हमको आकर कहा, ''चलो, चलो, बाबा बुला रहे हैं।'' हम सब लोग बाबा के कमरे में जाकर बैठ गये, अब हमारी सारी थकान उतरने लगी। बाबा ने समाचार पूछा, मुरली की पढ़ाई के लिए पूछा। तब ईशू दादी मुरली भेजने की इन्चार्ज थी, उन्होंने बाबा को बताया, ''बाबा, इनके लिए मुरली भी जाती है और पत्र भी जाता है।'' फिर बाबा ने पूछा, ''कैसे आए?'' हमने अपने आने की कहानी विस्तार से बतायी। बाबा ने कहा, ''बच्चे, पैर दिखाओ।'' हमने सूजे हुए पैर दिखाए। बाबा ने पूछा, ''बच्चे, कितने किलोमीटर चले?'' हमने बताया कि

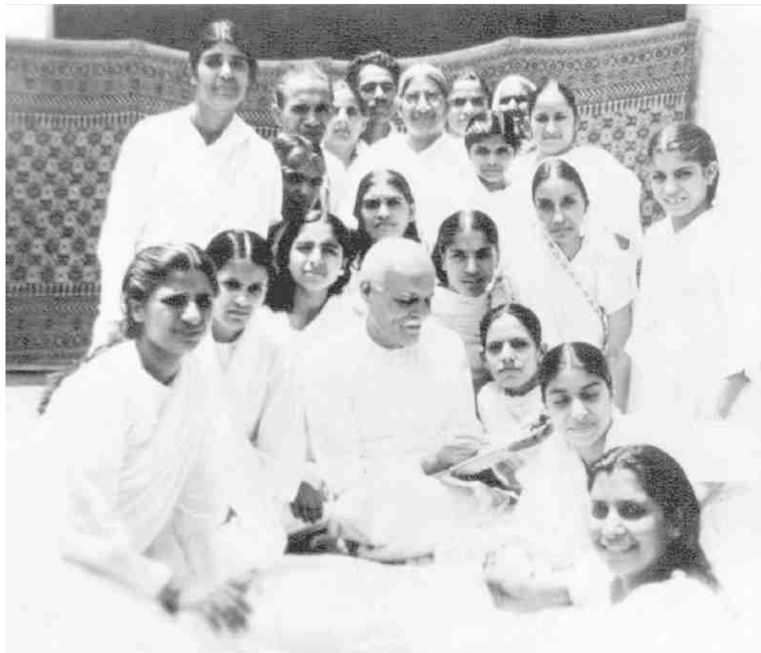

पैंतीस किलोमीटर चले। तब बाबा ने ''भगवान ने द्रौपदी के पैर दबाए थे ना!'' ऐसे कहकर हमारे पैरों को सहलाया, हमारी सारी थकान दूर हो गई।

श्रीकृष्ण और सुदामा का मिलन

उन दिनों गांधीवाद जोरों पर था, मैंने चरखा प्रतिस्पर्धा में भाग लेकर गलीचा इनाम में पाया था। मैं बाबा के लिए उसे साथ ले आई थी। जब बाबा को दिया, तो बाबा ने कहा, ''बच्ची, तुमने तो मुझे कर्जदार बना दिया, मैं तुमको तुरन्त रिटर्न करूँगा।'' बाबा ने लच्छू दादी को शॉल ले आने को कहा। चूंकि बहुत देर हो चुकी थी, उन्होंने टालते हुए, ''बाबा, कल'' ऐसे कहा। बाबा ने कहा, ''नहीं बच्ची, कल का दिन तो काल का होता है। अभी इस बच्ची ने दिया है, अभी ही इसको मैं देना चाहता हूँ।'' फिर बाबा ने खुद उठकर बड़ी पेटी में से शॉल लाकर मुझे ओढ़ाया और इन्कम टैक्स कमिश्नर (बाबूजी) के बंगले में हमारा ठहरने का इन्तजाम करवाया। उनकी कार से ही हमको बंगले तक छुड़वाया भी। सवेरे हम कोठी पर बाबा की मुरली सुनने वापिस आ गए। बस, अब तो जैसे हम वहाँ रहने लग गए, पीछे का सब भूल गये, भगवान जो मिल गया। बाबा से हमारा मिलन जैसे सुदामा और श्री कृष्ण का मिलन था जिसे देख सब लोग आश्चर्यचकित थे।

यह बेटी तो मेरी है

हम तीन दिन वहाँ पर रहे। एक दिन क्लास के बाद नाश्ता करके बाबा गार्डन में खड़े थे, तब हमने कहा, ''बाबा, हम जा रहे हैं।'' बाबा ने सबको दृष्टि दी, दृष्टि देते हुए मेरे को तीन बार देखा, ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक, फिर कहा, ''बच्ची, तुम क्यों जाती हो? तुमको तो बाबा के पास रहना है।'' फिर लौकिक पिताजी से कहा, ''यह बेटी तो मेरी है। तुम्हारा क्या ख्याल है?'' लौकिक पिताजी ने कहा, ''आपकी है तो हम कौन होते हैं कुछ कहने वाले?'' बाबा दो कदम आगे आये, मेरा हाथ पकड़ा और कहा, ''बच्ची तुमको नहीं जाना है।'' बाकी सारे लोग चले गये। उस दिन के बाद आज तक मैं कभी लौकिक घर में लौट के एक बार भी नहीं गई। जब हमारे पिताजी ने शरीर छोड़ा (45 साल के बाद) तब इसलिए गई ताकि कोई यह न कहे कि शरीर छोड़ने पर भी नहीं आई। दिल्ली और अमृतसर में कुछ दिन रहने के बाद बाबा ने मुझे मधुबन बुला लिया। वहाँ बाबा ने पूछा, ''बेटी, तुमको सब कुछ आता है?'' हमने अपनी बुद्धि अनुसार हाँ कह दिया। बाबा ने हमको 'तथास्तु' कहा। यह पहला वरदान मुझे बाबा से डायरेक्ट मिला। उस दिन से लेकर आज तक, यज्ञ का कोई भी काम हो, चाहे सरकारी, चाहे घरेलू, मुझे कोई रुकावट नहीं आती ।

माता, पिता और शिक्षक के रूप में बाबा

बाबा का माँ का रूप : एक बार मुझे गर्मी से चिकनपोक्स (चेचक) निकल आई। बाबा ने स्वयं ही मेरी ओर सुबह-शाम ध्यान दिया। विश्वरतन दादा को दवाई देने को तथा

अन्य किसी को इन्फेक्शन ना लगे, उसका ध्यान रखने को भी कहा। गाय का दूध और गुलाब जल डालकर मुझको स्नान कराया गया, फिर मैं ठीक हो गई।

बाबा का बाप का रूप : एक बार हम घूमने गए, तो करोन्दा लेकर आए और आपस में मिलकर खा लिया। बाबा ने पूछा, ''बच्चे, बाबा को दिखाया, बाबा को खिलाया?'' बाबा ने दूसरे दिन फिर घूमने भेजा। फिर हमने करोन्दा लाकर बाबा को दिया। तब बाबा ने कहा, ''बच्ची, जो घर के बड़े हैं उनकी नज़र में सब बातें आनी चाहिएँ, भले ही वो करोन्दा ही क्यों न हो।'' उस दिन से हमने हर चीज़ बड़ों की नज़र में लाना शुरू कर दिया।

बाबा का शिक्षक का रूप : मुझे ज्ञान का कोर्स कराना नहीं आता था। बाबा ने रतनमोहिनी दादी को मुझे सिखाने को कहा। दादी ने, जहाँ जिज्ञासु आते थे, उसी टेन्ट के पीछे कुर्सी डालकर बैठकर सुनने को कहा। बाबा कहते थे, ''बच्ची, तुम जाओ देखो, दादी क्या सुनाती है, जिज्ञासु क्या प्रश्न करता है और दादी क्या उत्तर देती है, सब सुनो।'' टेन्ट के पीछे बैठकर मैं बड़ी लगन से सुनती थी, इस प्रकार कोर्स कराना सीख गई।

कल नाम काल का

एक दिन हम एक खटिया पर बैठे थे, उसकी निवार ढीली हो गई थी। थोड़ी देर बाद बाबा जब वहाँ से निकले तो कहा, ''यह खटिया ढीली हो गई है।'' हमने कहा, ''हाँ बाबा, कल कस लेंगे।'' बाबा ने तुरन्त समझाने के भाव से कहा, ''नहीं बच्ची, कल का दिन काल का है। अभी कसेंगे।'' बाबा ने हमें खटिया से उतार कर, निवार को खींचकर कसना शुरू कर दिया। फिर हम भी बाबा के साथ लग गए। उस दिन से मैंने पक्का कर लिया कि मुझे कल पर कुछ काम नहीं डालना है, आज ही करना है, अभी करना है। तब से नेचर बन गई है कि आज का कोई काम आज ही करना है चाहे रात के बारह क्यों न बज जाएँ।

बाबा ने चिन्तन करना सिखाया

जब जगदीश भाई जी दिल्ली से आये तो बाबा ने मेरे लिए कहा, ''इनको और ट्रेनिंग दो।'' फिर बाबा ने मुझे कहा, ''जो मैं सुबह मुरली चलाऊँ, वो शाम को तुम चलाओ तो मैं सुनूँगा कि तुमको कितना याद रहता है।'' बाबा का सुनाया हुआ मुझे सब याद रहता था, मैं सब बाबा को सुनाती थी। फिर बाबा ने ट्रेनिंग दी, दिन भर सेवा भी करो और सोचो कि मैं स्कूल में खड़ी हूँ, मुझे 'शिक्षा' विषय पर क्या-क्या बोलना है। फिर तो चलते-फिरते यही सोचते रहे कि हम भाषण कर रहे हैं। बुद्धि में यही रहता था कि आज हम ऐसे समझा रहे हैं, आज हम ऐसे समझा रहे हैं। ऐसे टीचर बनकर बाबा ने तैयार किया। उसी का प्रभाव है कि आज कैसी भी स्थिति आये, हम कहीं भी पीछे नहीं रहते।

नष्टोमोहा

एक बार लौकिक पिताजी बीमार पड़े और ग्लोबल हॉस्पिटल में भर्ती हुए । इलाहाबाद की मनोरमा बहन ने मुझे कहा, ''चलो, आपके पिताजी भर्ती हुए हैं, देखकर आते हैं।'' वो भी उनसे परिचित थी इसलिए हम साथ गये। पिताजी से मिले, बातचीत की। मनोरमा बहन ने पिताजी से पूछा, '' इनको पहचानते हो?'' पिताजी बोले, ''हाँ, मधुबन में देखा है।'' मनोरमा बहन ने कहा, ''यह तो विद्या है, आपकी बेटी।'' पिताजी ने शक्ल ही नहीं देखी थी तो पहचानेंगे कैसे? कभी आमने-सामने ही नहीं पड़े थे। उनका मधुबन आने का अपना समय और हमारा आने का अपना समय होता था। कभी मिले ही नहीं 45 सालों में।

ऐसी लगन हमें अपने पारलौकिक पिता की लगी कि हम सुध-बुध ही खो चुके हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि कान्हा की मुरली के लिए गोपियाँ ऐसी दीवानी होती थीं कि आँख का काजल गाल पर लगाये मुरली के पीछे भागती थीं! यकीनन यह हमारे लिए ही गायन है, ऐसा मैं पूरे आत्मविश्वास के साथ कह सकती हूँ। अन्त में पाठकों को इतना ही कहूँगी, आज्ञाकारी, ईमानदार, वफादार और अथक होकर सेवा करनी है, कभी थकना नहीं है।

❖

बाबा ने खिलाया घी और मेवा

❊ ब्रह्माकुमार नितिन, सायन (मुंबई)

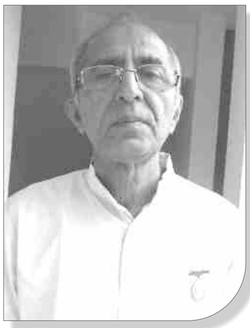

बात सन् 1962 की है, मैं मुंबई में रहता था। हमारे क्षेत्र के सभी लोग मिलकर साल में एक दिन एक साथ खाना (सामूहिक भोज) खाया करते थे। लेकिन भारत-चीन युद्ध के चलते इकट्ठे खाना खाने की मना थी। हमारे प्रबंधन समूह का जो बड़ा था वह ब्रह्माकुमारियों के बारे में जानता था। उसने कहा, हम सामूहिक भोज तो नहीं कर सकते लेकिन ब्रह्माकुमारियों को बुलाकर ज्ञान तो सुन सकते हैं। उस समय ब्र.कु.रमेश भाई, ब्र.कु.ऊषा बहन तथा ब्र.कु.नलिनी बहन उनके निमंत्रण पर पधारे। नलिनी बहन ने अपने प्रवचन में 3 बंदरों का उदाहरण देकर कहा कि परमात्मा सर्वव्यापी है यह बात कानों से सुनो मत, मुख से बोलो मत और आँखों से पढ़ो भी मत। मुझे यह सब बातें बहुत अच्छी लगीं। प्रवचन के बाद उन्होंने वाटरलू मेन्शन स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र का पता दिया। अगले दिन मैं और मेरे पिताजी दोनों इकट्ठे सेवाकेन्द्र पर गये और उसके बाद मैं अकेला रोज 10 कि.मी.सफर करके जाने लगा। तब मेरी आयु 17 वर्ष थी। दादी बृजशांता ने मुझे कोर्स कराया।

रोज़ का पाठ रोज लिखता था

पहले दिन मुझे आत्मा का पाठ पढ़ाया गया, मैंने घर जाकर वह जैसे का तैसा लिखा, अगले दिन दादी को दिखाया। इस प्रकार मैं रोज़ का पाठ रोज लिखता रहा क्योंकि मुझे यह सब बातें बहुत अच्छी लगी। उन दिनों तीन ही चित्र हुआ करते थे – त्रिमूर्ति, झाड़ और गोला और यही तीन चित्र समझकर कोर्स पूरा हो जाता था। मेरा कोर्स पूरा होते-होते दो नये सेवाकेन्द्र खुल गये, एक कोलाबा में और दूसरा गामदेवी में। फिर मैं गामदेवी सेवाकेन्द्र पर रोज मुरली सुनने जाने लगा।

बंधन डालने शुरू कर दिए

इसी बीच मेरा एस.एस.सी.(मैट्रिक) का परीक्षा परिणाम आ गया। मैंने दादी को कहा कि अब मैं रोज नहीं आ सकूँगा क्योंकि मुझे बी.कॉम. करना है। उन्होंने कहा, तुम सायन में जाया करो, वो तुमको नज़दीक पड़ेगा। वहाँ बृजेन्द्रा दादी निमित्त थी। जब मैं वहाँ रोज क्लास करने लगा तो मेरे बड़े भाई मेरे विरुद्ध हो गये क्योंकि उन्हें लगा कि यह संन्यासी हो जायेगा और धीरे-धीरे बंधन डालने शुरू कर दिए। पहले तो मुझे, जो 5 रुपये जेबखर्च मिलता था, वह बंद कर दिया। मैंने दादी जी को बताया तो उन्होंने कहा, चिंता नहीं करो, तुम हमसे 5 रुपये लिया करो, बाबा बैठा है। उन्होंने उसी समय पर्स मंगाया और 5 रुपये निकालकर मुझे दे दिये।

बाबा पहले से बता देते थे

उन दिनों सेवाकेन्द्र जाने का 10 पैसे किराया लगता था। मेरे मन में आया, मैं यज्ञ का पैसा कैसे खर्च कर सकता हूँ, यज्ञ में तो देना होता है, लेना नहीं। इसलिए मैंने पैदल आना-जाना शुरू किया। पैदल जाने में 35 मिनट लगने लगे। इन 35 मिनट में मैं बाबा से बातें करता था। मैंने बाबा को खुदा दोस्त बना लिया था। जब सेवाकेन्द्र से घर लौटता था तो रूहरिहान में बाबा मुझे बता देते थे कि बच्चे, आज भोजन में प्याज और लहसुन डाला गया है अत: खाना नहीं। मैं माँ को कहता था, माँ मेरी तबियत ठीक नहीं है, मैं दही-चावल खाऊँगा। माता-पिता तो कुछ नहीं कहते थे। बड़े भाई ने कभी सोने में बाधा डाली, कभी भोजन में बाधा डाली, कभी हाथ भी उठाया लेकिन बाबा मुझे पहले से बता देते थे तो मैं मानसिक रूप से तैयार हो जाता था। जब कभी घर में भोजन की समस्या आती थी तो दादी बृजेन्द्रा मुझे सेवाकेन्द्र पर खाना खिला देती थी। इस प्रकार बंधन का मेरा यह पार्ट तीन साल चला। इन तीन सालों में बी.कॉम.

पास कर लिया। मैं छत पर बैठकर 18 घंटे पढ़ाई करता था, आश्रम में जाने के कारण मेरी एकाग्रता और स्मृति बढ़ गई थी। कॉलेज में सवा घंटा खाली समय मिलता था, जब घर पर बन्धन बहुत बढ़ा तो मैं उस खाली समय में सेवाकेन्द्र जाकर मुरली पढ़कर आने लगा। जहाँ तक पढ़ चुका होता था उसकी पहचान के लिए किताब में बाबा का फोटो या मुरली डाल देता था लेकिन एक दिन जब मेरी किताब में बाबा का फोटो और मुरली मिली तो भाई फिर नाराज हो गए कि यह तो अभी भी जाता है।

अन्तिम शस्त्र

फिर उन्होंने अन्तिम शस्त्र उठाया और कहा कि अब से आगे तुम वहाँ गये तो वापस घर मत आना। मैंने यह बात दादी को बताई तो दादी ने कहा, तुम यहाँ ही आ जाओ। एक भाई के घर मेरे सोने का प्रबंध कर दिया गया और दादी ने मेरी नौकरी भी लगवा दी। दादी ने 100 रुपये भी दिए और कहा, अपने लिये कपड़े ले आओ। इस प्रकार दादी जी से कदम-कदम पर स्नेह, सहयोग, मार्गदर्शन और पालना मिली।

तीन शर्तें हुई मन्जूर

कुछ समय बाद मेरे बड़े भाई की शादी तय हो गई। परिवार वालों ने सोचा, हमने उसको घर से निकाल दिया, अब शादी में भी शामिल नहीं होगा तो मित्र-संबंधी जब पूछेंगे कि आपका छोटा बच्चा कहाँ है, तो हम उन्हें क्या जवाब देंगे इसलिए उन्होंने सेवाकेन्द्र पर फोन किया कि नितिन को घर भेजो। दादी जी ने कहा, उसे घर से आपने ही निकाला है, वह घर आने को तैयार है। फिर दादी जी ने मुझे कहा, अब तुम्हारा पक्ष भारी हो गया है इसलिए घर जाओ पर दरवाजे पर खड़े होकर कहना, मेरी 3 शर्तें हैं, अगर मंजूर हैं तो मैं घर में अन्दर आऊँ? तीन शर्तें थी – 1.खाने में प्याज-लहसुन नहीं डालोगे, 2.सेवाकेन्द्र पर जाने के लिए मना नहीं करोगे और 3.नौकरी से जो मिलेगा उस में से घर का हिस्सा दे दूँगा बाकी यदि यज्ञ में खर्च करूँ तो मना नहीं करोगे। घरवालों ने तीनों शर्तें मंजूर कर लीं। उसके बाद घर में निर्विघ्न रूप से रहने लगा और अब तक वहीं रह रहा हूँ।

नितन अर्थात् बिना तन

सेवाकेन्द्र के आस-पास कई बार पानी भर जाता था, उस गन्दे पानी को पार करके भी सेवाकेन्द्र पर मुरली सुनने पहुँच जाता था। दादी बृजेन्द्रा कहती थी, इतने गन्दे पानी में से आने की क्या जरूरत थी? घर में मुरली पढ़ सकते थे। मैं कहता था, मानलो इसी बिल्डिंग में मैं ऊपर के किसी माले पर रह रहा होता तो अपने घर तो आता ना! बेशक गन्दा पानी भरा होता, तो सेवाकेन्द्र भी तो मेरा घर ही है। मैंने आज तक सुबह, शाम की मुरली मिस नहीं की। मेरा लौकिक नाम नितिन है। दादी बृजेन्द्रा मुझे नितन कहती थी जिसका अर्थ है बिना तन। दादी बृजेन्द्रा अव्यक्त हो गई तो दादी प्रकाशमणि मुम्बई में मुझसे स्पेशल मिली और कहा, नितन, तुम चिन्ता नहीं करना, यह दादी बैठी है, कोई भी बात हो, दादी को आकर कह सकते हो।

चिपक गया बाबा से

मैं नवम्बर, सन् 1962 में ज्ञान में आया, सन् 1963 में पहली बार दादी बृजेन्द्रा मुझे मधुबन लेकर आई थी। मेरे पास पैसे नहीं थे, दादी ने ही टिकिट बनवाकर दी थी। उन दिनों यज्ञ में इतना धन नहीं था। दादी ने रास्ते के लिए उबले आलू लिए, नमक, काली मिर्च डालकर रोटी के साथ पहले मुझे खिलाए, फिर खुद भी खाए, इस प्रकार दादी का जीवन बहुत सादा और तपस्यामय था। बाबा कहते हैं, मैं मैगनेट हूँ। पहली बार जब बाबा को देखा, मुझे पता ही नहीं पड़ा, मैं कब बाबा को चिपक गया। पाँच मिनट ऐसे ही चिपका रहा, तब बाबा ने थपथपाके उठाया। रमेश भाई के हाथ मुझे बाबा रोज फल भेजते थे। एक बार पहाड़ी पर चढ़ने के कारण मेरी नकसूरी (नाक में से खून निकलना) फूटी थी। दादी ने मुझे कहा, आराम करो। मैं आराम करने चला गया। उस दिन हिस्ट्री हॉल की छत पर बाबा ने पिकनिक रखी थी। उसमें समोसा, चाय आदि का प्रबन्ध था। बाबा ने पूछा, वो बच्चा कहाँ है? दादी ने बताया, तो बाबा बोले, यज्ञ में बच्चे ने खून दिया है, बाबा हजार गुणा देगा। फिर बाबा ने सन्तरी दादी को कहा, घी में सूखा मेवा पीस कर डाल देना, सुबह

योग के बाद बाबा बच्चे को खिलाएगा। बाबा ने कहा, बच्चे, रोज योग के बाद बाबा के पास आना। दादी बनाकर रखती थी। जितने दिन रहा, बाबा ने रोज घी और मेवा खिलाया। उससे बहुत ताकत भर गई।

सांख्यिकी में हुआ होशियार

प्यारे बाबा के ज्ञान में आने से जो एकाग्रता की शक्ति आई उस कारण मेरा सांख्यिकी (हिसाब-किताब) बहुत अच्छा था। मुझे अधिकारी के पद के लिए 10 बार ऑफर आई लेकिन मैंने मना कर दिया क्योंकि बन्धन आ जाएगा, स्टाफ सम्भालना पड़ेगा। एकाउन्टेंट के पद पर रहते हुए मैं अपने कार्यों को तीन घण्टे में पूरे कर ऑफिस में बॉस के सामने ही यज्ञ की पुस्तकें पढ़ता था। मैंने कभी ओवर टाइम लेकर काम नहीं किया, मेरे से पहले वाला एकाउन्टेंट 8 घण्टे काम करके भी ओवर टाइम करता था और फिर भी काम बाकी पड़ा रहता था। मेरा बॉस मेरे हिसाब-किताब पर बिना देखे साइन कर देता था।

ऑफिस में कोई विरोधी नहीं

ऑफिस में हर रोज दो समय 10-10 मिनट मैं स्टाफ को शुभ भावनाओं का योगदान देता था जिस कारण कोई भी मेरा विरोधी कभी नहीं हुआ। उन दिनों कम्प्यूटर नए-नए आए थे, उसकी ट्रेनिंग 5.30 के बाद होती थी। मैंने कहा, मैं 5.30 के बाद रुकूँगा नहीं। किताबें पढ़कर मैंने कम्प्यूटर सीखा और सारा हिसाब कम्प्यूटर में कनवर्ट कर दिया। एक्सेल में मेरी मास्टरी हो गई थी। जब रिटायर्ड हुआ, बॉस ने कहा, अभी तक मैं आपका बॉस था, पर अब आप मेरे स्टाफ नहीं रहे, रिटायर हो गए हो इसलिए मैं हाथ नहीं मिलाऊँगा, उस लायक मैं नहीं हूँ, आपकी स्टेज मेरे से कई गुणा ऊँची है, आपको प्रणाम करता हूँ। स्टाफ की बहनों ने पाँव पकड़े और नमस्कार किया, वे रोईं और कहा, अब हमारा ध्यान कौन रखेगा? मैंने कहा, बॉस है ना। उन्होंने कहा, बॉस अपनी जगह है, आप अपनी जगह। उन्हें कुछ भी चाहिए होता था तो मेरे साइन से सब पास हो जाता था।

प्यारे ब्रह्मा बाबा

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुड़गाँव

प्यारे ब्रह्मा बाबा आप हो, सबके भाग्यविधाता
भागीरथ बन लिखी आपने, सत्कर्मों की गाथा
त्याग-तपस्या और सेवा से, है जीवन को सींचा
नव संसार रचाने को, सुन्दर खाका है खींचा
तन-मन-धन स्वाहा कर, बस प्रभु से गहरा नाता
भागीरथ बन ....

निन्दा की जिसने भी, उसको मित्र अपना माना
स्नेह, त्याग, तप से सबने, आपको है पहचाना
थी उदारता इतनी, कोई कहाँ आप सम दाता
भागीरथ बन ....

बन उदाहरणमूर्त सदा, सम्मान सभी का करते
भावों में इतनी सुन्दरता, गुणगान सभी का करते
मुझे देखकर करें सभी, हर कर्म यही सिखलाता
भागीरथ बन ....

निर्मान सदा इतने, खुद को सेवक ही कहलाया
बच्चों को आगे रखा सदा, महिमा योग्य बनाया
देख आपको लक्ष्य सहज, स्पष्ट नज़र आ जाता
भागीरथ बन ....

बनकर पवित्र, पवित्रता की दी श्रेष्ठ पहचान
मन-वाणी और कर्म से, दिया सदा सद्ज्ञान
हर कर्म आपका आदर्शों का मूर्त रूप दर्शाता
भागीरथ बन ....

बाबा का कमरा सूक्ष्मवतन लगता था

✻ ब्रह्माकुमारी वीना, उधमपुर (जम्मू-कश्मीर)

मैंने सन् 1958 में ब्रह्मा बाबा को दिल्ली राजौरी गार्डन में पहली बार देखा। उस समय मेरे शरीर की आयु सिर्फ आठ वर्ष थी। मैं अपने माता-पिता के साथ गई थी। मेरे पिताजी ब्रह्माकुमारी संस्था के नजदीक सम्पर्क में और सहयोगी थे। वे आर्मी में अधिकारी थे और हैदराबाद की कुलदीप बहन के पिताजी ब्र.कु.महेन्द्र भाई उन्हें अपने साथ ले गए थे। एक वर्ष तक मैं उनके साथ सेवाकेन्द्र पर जाती रही। इस दौरान बाबा की गोद में जाने का सौभाग्य भी मिला। बाबा हमें टॉफी देते थे। एक वर्ष के बाद लौकिक पिताजी की ट्रान्सफर के कारण हम अमृतसर में आ गए और सेवाकेन्द्र दूर होने के कारण माता-पिता वहाँ नियमित नहीं जा पाए, थोड़ा-थोड़ा सम्पर्क रहा। मैंने अमृतसर में दो बार मम्मा को देखा, उनसे मिली, बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा पर मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त रही। इसके बाद हमारी ट्रान्सफर पूना में हो गई और वहाँ मैं सेन्ट मीरा कॉलेज (St. Mira's College) में पढ़ने लग गई।

मुझे केवल बाबा का आकर्षण था

सन् 1967 में एक दिन मैंने कॉलेज के बाहर त्रिमूर्ति के चित्र वाला एक पोस्टर लगा देखा। उसमें ब्रह्मा बाबा के चित्र को देख मन में सोचा, इनको तो मैंने बचपन में देखा है। उस पोस्टर में सेवाकेन्द्र पर आने का निमन्त्रण था। अगले दिन थोड़ा जल्दी आकर मैंने वो पोस्टर उतार लिया। उसमें से सेवाकेन्द्र का पता लिया और पहुँच गई। वहाँ मुझे बृजशान्ता दादी मिली। उन्होंने मुझे बहुत प्यार से भोजन खिलाया और रोज आने के लिए प्रेरित किया। फिर मैं कॉलेज के खाली समय में सेवाकेन्द्र जाने लगी। मुझे केवल बाबा का आकर्षण था, मैं हर हाल में बाबा से सम्मुख मिलना चाहती थी। सेवाकेन्द्र पर मुझे महसूस होता था, मैं उड़ रही हूँ, बहुत हल्की हो गई हूँ। हर तरफ लाइट ही लाइट महसूस करती थी और दुनिया से पूरी तरह वैरागी बन गई थी।

बाबा को कमरे के दरवाजे पर देखा

माता-पिता को पता पड़ा तो उन्होंने सेवाकेन्द्र पर जाने से मना किया परन्तु मेरे जीवन का लक्ष्य दृढ़ हो गया था। सन् 1968 में बृजशान्ता दादी पार्टी लेकर मधुबन जा रही थी, मैंने भी जाने के लिए आग्रह किया। वे मुझे अपने साथ ले आई। उन दिनों मधुबन में पार्टी काफी समय रुकती थी। मैं 25 दिन बाबा के साथ मधुबन में रही। तब मेरी आयु 18 वर्ष की थी और मैंने दिव्य नेत्र के द्वारा अनुभव किया कि कैसे शिव बाबा, ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर मुरली चलाते हैं। जिस दिन मैं मधुबन पहुँची उससे अगली सुबह पौने चार बजे मुझे महसूस हुआ कि बाबा मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़े हैं। मैं गहरी नींद में थी, चौंककर उठी, मैंने सोचा बाबा कमरे में आ गए हैं। उठकर मुँह धोया, फिर देखा, दरवाजे पर कोई नहीं था। हिस्ट्री हॉल में गई तो देखा, बाबा गद्दी पर बैठे थे। इसके बाद प्रतिदिन पौने चार बजे अपने आप हॉल में पहुँचने लगी। इस प्रकार बाबा ने अमृतवेले उठने का मेरा अभ्यास पक्का कर दिया।

बाबा की आवाज लगती थी आकाशवाणी

जब मैं बाबा से मिली तो मुझे लगा कि बाबा का कमरा ऊपर सूक्ष्मवतन में चला गया है और वहाँ बहुत तेज प्रकाश

है। मुझे लगा, बाबा की आँखों में बहुत बड़ी-बड़ी ट्यूब लाइट फिट की हुई हैं और बाबा जो बोल रहे हैं वह आवाज ऊपर से आकाशवाणी हो रही है। उन 25 दिनों में मैं ज्यादा समय बाबा के कमरे के बाहर खड़ी रहती थी। बड़ी बहनें मुझे कहती थी, अपने कमरे में जाओ तो मुझे बहुत रोना आता था कि ये मुझे बाबा से दूर क्यों कर रही हैं। कोई भी बहन-भाई जब बाबा के पास जाते थे तो उनके साथ मैं फिर बाबा के पास चली जाती थी। बाबा कभी मना नहीं करते थे और सारा दिन टोली खिलाते रहते थे।

मुझे अनुभव होने लगा कि जिसने भगवान अर्थात् विश्व की सर्वोच्च सत्ता को पा लिया उसको पढ़ाई-नौकरी या दुनिया की किसी भी वस्तु का आकर्षण नहीं रहता है। एक भगवान में सारा विश्व समाया हुआ है इसलिए मैंने बाबा को कह दिया कि मैं वापिस घर नहीं जाऊँगी परन्तु बाबा ने कहा कि पढ़ाई पूरी करके वापस आ जाना। मुझे क्या मालूम था कि पढ़ाई पूरी करने तक बाबा नहीं रहेंगे। सन् 1969, जनवरी को जब मैंने बाबा के अव्यक्त होने का समाचार सुना तो धक्का लगा कि बाबा हमको छोड़कर क्यों चले गये। फिर शिवबाबा ने मुरली चलाकर सब बच्चों को शान्त कर दिया और विश्व सेवा की प्रेरणा दी कि बाप को प्रत्यक्ष करना है। बाद में मैं 1 वर्ष मधुबन में दादियों के साथ रही और फिर यज्ञ में समर्पित हो गई। वर्तमान समय बाबा ने जम्मू-कश्मीर में उधमपुर सेवाकेन्द्र के निमित्त बनाया हुआ है। ❖

जो 16 वर्ष में न मिला, वो ढाई महीने में मिला

ब्रह्माकुमार मानसिंह, कुकडोल, खरगोन (म.प्र.)

ज्ञानामृत पत्रिका वह सुधा है जिसे पीने के बाद मनुष्य के जीवन की सारी विपत्तियाँ दूर चली जाती हैं और जीवन सरल एवं सुबोध बन जाता है। पेशे से मैं जन स्वास्थ्य रक्षक हूँ, प्राथमिक उपचार द्वारा लोगों की स्वास्थ्य सेवा करता हूँ लेकिन जीवन में इतना कठिन समय आया कि जीने की उम्मीद पूरी तरह समाप्त हो गई। मुझे एक रोग लगा, लगभग 16 माह तक मैं उससे लड़ता रहा, पूरी तरह डिप्रेशन में चला गया। लगभग 8 डॉक्टरों का इलाज मुझ पर असफल रहा। किसी की दवाई, गोली काम नहीं कर रही थी। मेरे विचार अति नकारात्मक हो गए। मैं कई देवी-देवताओं के पास गया, कई जगह स्नान किया, सभी जगह से थोड़ा-बहुत फायदा होता, एक उम्मीद बनती और टूट जाती। ऐसे चढ़ाव-उतार की जिन्दगी से हैरान-परेशान था।

एक दिन मेरी एक सम्बन्धी बहन ने मुझे ज्ञानामृत पत्रिका दी, कहा, इसे पढ़ना, शायद कोई कृपा हो जाये। ग्यारह जुलाई, 2015 को ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ी एवं 14 जुलाई, 2015 को ईश्वरीय क्लास में शामिल हो गया। फिर सात रोज का कोर्स पूरा किया। हर रोज बाबा की मुरली सुनने लगा। मेरे निवास स्थान के समीप ही ओम शान्ति का केन्द्र खुल गया। वहाँ से 10-12 पुरानी ज्ञानामृत पत्रिकायें मंगवा ली। उनसे मैंने जीवन जीने का तरीका सीख लिया। शिव परमात्मा की कृपा एवं ज्ञानामृत के पठन-पाठन से मन के सारे बुरे विचार धुल गये, बीमारी चली गई। अब मैंने बीमारी से निजात पा ली है। परमात्मा पिता ने अपनी प्रतिज्ञा में कहा है, ''तू मेरी राह पर चल करके तो देख, तेरे लिये दया के सब द्वार न खोल दूँ तो कहना।'' यह सचमुच सत्य है। आज मेरा हौसला बुलंद है, मेरे विचार पूरी तरह सकारात्मक एवं सक्षम हैं क्योंकि मेरे साथ हर समय मेरे शिव बाबा हैं।

वाह, बाबा वाह! तहे दिल से आपका शुक्रिया। जो मंज़िल मुझे 16 माह में नहीं मिली, वह आपसे 2½ महीने में मिल गई। मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का आभार मानता हूँ जिसके द्वारा ज्ञानामृत पत्रिकाओं का प्रकाशन होकर जन-जन तक पहुँचता है। अब मैं शिवबाबा (परमात्मा) का बन गया हूँ। ❖

बाबा ने कहा, बहुत मीठी बच्ची है

✻ ब्रह्माकुमारी सौभाग्य, कोलकाता (कोन्नगर)

सन् 1963 से मैं ईश्वरीय मार्ग पर चल रही हूँ। तब सिर्फ शिवबाबा की लाइट ही सेवाकेन्द्र पर लगी हुई होती थी। ब्रह्मा बाबा का चित्र नहीं लगाया जाता था। महसूस होता था, सच में भगवान हमें मिल गये हैं। कापारी नशा चढ़ गया था। सेवाकेन्द्र, मुरली और ज्ञानामृत के सिवाय कुछ सूझता ही नहीं था। ब्रह्मा बाबा से मिलने की प्रबल इच्छा जाग उठी थी। सृष्टि पर आये हुए भगवान से हम कैसे मिलें, दिन-प्रतिदिन यह तड़पन बढ़ती जाती थी। प्यार में आंसुओं की धारा बहती रहती थी। मैं योग में बैठकर शिवबाबा से कहती, यदि इस सृष्टि पर आप आये हैं तो मैं आपकी करामात तब मानूँगी जब मैं ब्रह्मा बाबा से सम्मुख मिलूँगी। यदि मैं ब्रह्मा बाबा से नहीं मिल पाई तो इसका मतलब है कि आप इस धरा पर आये ही नहीं। आखिर वह दिन आया जब मैं राजस्थान गई। एक पोस्टकार्ड लिखा ब्रह्मा बाबा के नाम से, बाबा, आप किसी भाई को स्टेशन पर मुझे लेने भेज देना। ब्रह्मा बाबा से माउंट आबू में मिलन हुआ। मिलकर हम धन्य-धन्य हो गये।

नाना-दादा जैसे लगते थे ब्रह्माबाबा

मैं मन में विचार करती थी कि ब्रह्मा बाबा कोई गेरूए वस्त्रधारी साधु-संन्यासी जैसे होंगे लेकिन ब्रह्मा बाबा तो जैसे घर में नाना-दादा होते हैं ऐसे गोरे-गोरे सेठ की तरह लगते थे। मैं एक सप्ताह वहाँ पर रही, ब्रह्मा बाबा के साथ नाश्ता किया, खाना खाया, झूले में झूले। जब कभी मैं ब्रह्मा बाबा के सामने जाती थी, बाबा एक ही शब्द बोलते थे, बहुत अच्छी, मीठी बच्ची है। मैं तो गुब्बारे की तरह फूल जाती थी। ब्रह्मा बाबा बरगद के पेड़ के पास छोड़ने के लिए आये। मेरी आँखों से आसुओं की धारा बह रही थी लेकिन ब्रह्मा बाबा ने तुरंत मुँह घुमा लिया।

अपने बल्ब की पावर देखी है ?

सन् 1966 में निर्मलशान्ता दादी पुनः हमें अपने साथ आबू लेकर गई। वहाँ तीन महीने खाना खिलाने की सेवा की। मैं रोज बापदादा की मुरली सामने बैठकर सुनती थी और शिवबाबा का अंगुष्ठाकार ज्योति स्वरूप ब्रह्मा बाबा के मस्तक पर देखती थी। एक बार दीदी ने पूछा, सौभाग्य, तुम इतनी मोटी कैसे हुई? मैंने कहा, दीदी, मुरली सुन-सुन कर मैं बहुत खुश रहती हूँ इसलिए मोटी हो गई। जब बाबा अव्यक्त हुए, मैं नेपाल में विराट नगर में थी। भोग लगा तब बाबा ने अपने बदले हुए पार्ट के सब राज़ खोले। बाद में एक दो-दिन बाद बाबा आते थे। रात को मैं 10 बजे अव्यक्त मुरली लिखने बैठती थी। अव्यक्त मुरली में ऐसे खो जाते थे, पता नहीं पड़ता था, एक बजा या दो बजे। एक बार हिस्ट्री हॉल में दिन में ग्यारह बजे अव्यक्त बाबा आये हुए थे। मैं अनुभव कर रही थी, मैं शून्य पावर का बल्ब, बाबा हजार पावर के बल्ब हैं। बाबा के मुख से पहला अव्यक्त महावाक्य उच्चारण हुआ, अपने बल्ब की पावर देखी है, कितने पावर का बल्ब है? फिर तो सब मुरली में खो गये। वरदानों की पालना से पल रहे हैं। अव्यक्त बाबा, दादी, दीदी की छत्रछाया में श्रीमत पर हम अपना कदम आगे बढ़ाते हैं। आज भी मेरा और कानन बहन का इतना प्यार है कि जैसे एक माँ से पैदा हुए हैं। हाँ, हमारी अलौकिक माँ तो निर्मलशान्ता दादी थी। ❖

अंगुली पकड़कर चला रहे हैं भगवान

✻ ब्रह्माकुमारी शील, जोधपुर (राजस्थान)

मेरा लौकिक जन्म सन् 1950 में एक पंजाबी परिवार में हुआ। लौकिक माता जी (उनका नाम गोबिन्दी है, पत्र में बाबा ने बिन्दी लिखा है) बहुत भक्ति भावना वाली हैं, बचपन से ही पूजा-पाठ के संस्कार हमें भी उनसे मिले। मैं अनेक व्रत रखती थी, पवित्र स्नान करना और मंदिरों में दर्शन करने जाना – बहुत अच्छा लगता था। लौकिक पिताजी का होलसेल कपड़े का व्यापार था, वे आर्य समाजी थे, समाज सेवा की भावना वाले थे लेकिन खान-पान शुद्ध नहीं था इस कारण माताजी व पिताजी का विवाद चलता रहता था।

लौकिक माताजी हमें सिखाती थी कि जब तुम्हारे पिताजी दुकान से आएँ तो तुम लोग किताब से, जोर-जोर से पढ़ना कि शराब पीने से ये-ये हानियाँ होती हैं। उनकी शुभ भावना थी कि किसी प्रकार पिताजी का शराब और मांसाहार का व्यसन समाप्त हो जाए परन्तु पिताजी का परिवर्तन तो ज्ञान-योग से ही हुआ।

बाबा ने खींचा चुम्बक की तरह

सन् 1960 में मेरे लौकिक ताऊ शामलाल जी जयपुर में ब्रह्माकुमारी आश्रम के सम्पर्क में आए और उनके जीवन में तुरन्त परिवर्तन आया। उनके मांसाहार-शराब आदि के व्यसन समाप्त हो गए। एक दिन उन्होंने मुझे भी कहा कि चलो, आपको बहुत अच्छी जगह ले चलता हूँ, अच्छा लगेगा तो साइकिल लेकर दूँगा फिर रोज जाया करना। इसके पश्चात् मैं और उनकी सुपुत्री प्रेम बहन (जयपुर, मालवीय नगर की निमित्त, 21 मार्च, 2015 को शरीर छोड़ा) हम दोनों सेवाकेन्द्र पर गए। वहाँ का शान्त और पवित्र वातावरण बहुत अच्छा लगा। ज्ञान तो इतना समझ में नहीं आया लेकिन बहनों के स्नेह भरे व्यवहार ने और बाबा ने हमें चुम्बक की तरह खींचा। फिर हम प्रतिदिन जाने लगे। बाबा ने बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव कराए, साक्षात्कार भी कराया। जब रोज जाने लगे तो लौकिक पिताजी को पता चल गया, उन्होंने विरोध किया और कहा, तुम जाओगी तो टांगें तोड़ दूँगा। साइकिल को ताला लगा दिया लेकिन माताजी के सहयोग से मैं फिर भी जाती रही।

पिताजी की ज्ञान-सेवा का आदेश

जब मेरे ताऊ जी तथा ताई जी मधुबन बाबा से मिलने जाने लगे तो मैंने भी पिताजी से जाने की छुट्टी मांगी तब मैं 9वीं कक्षा में थी, घूमने-फिरने के हिसाब से पिताजी ने छुट्टी दे दी। मधुबन में साकार बाबा से मिलन, रूह को बहुत राहत देने वाला था। जब बाबा की गोद में गए, ऐसे लगा, बाबा का हड्डी-माँस का शरीर है ही नहीं, रूई का, फरिश्ते का शरीर है। बाबा से मिलकर महसूस हुआ, सब कुछ मिल गया। एक दिन बाबा ने कहा, ''बच्ची, तुम भगवान लाल की बेटी हो (लौकिक पिताजी का नाम भगवान दास था पर बाबा 'दास' शब्द हटा देते थे, कहते थे, 'दास' नहीं

ब्रह्मा बाबा के साथ शील बहन

बनना है)?'' मैंने कहा, ''जी बाबा, मैं भगवान लाल की बेटी हूँ।' बाबा ने कहा, 'तुम्हें पिताजी की ज्ञान-सेवा करनी है।''

पिताजी का खान-पान हुआ शुद्ध

जब जयपुर वापिस आयी तो आदरणीया निर्मला बहन जी (जयपुर राजापार्क जोन की निमित्त) ने कहा कि बाबा ने तुमको सेवा का वरदान दिया है, तुम सेवा करो। बहन जी के शक्ति भरे बोल सुनकर मैंने लौकिक पिताजी को कहा, ''मेरे साथ सेवाकेन्द्र चलो, वहाँ कोई बुराई दिखे तो आगे से नहीं जाना, मैं भी नहीं जाऊँगी।'' मेरे बार-बार कहने से, मेरा दिल रखने के लिए वे सेवाकेन्द्र पर गए और वहाँ की पवित्रता से बहुत प्रभावित हुए। इसके बाद मुझे कभी मना नहीं किया। फिर उन्होंने सन् 1965 में निर्मला बहन जी से ज्ञान का 7 दिन का कोर्स किया, इन्हीं सात दिनों में उनका खान-पान शुद्ध हो गया, उन्हें अनुभव हुआ कि ये बहनें पवित्र देवियाँ हैं और फिर प्रतिदिन माता-पिता दोनों मुरली सुनने जाने लगे। फिर तो हमारा मार्ग पूरी तरह सहज हो गया।

शरीर छोड़ने के दिन भी सुनी सुबह की क्लास

माताजी-पिताजी जब मधुबन गए तो उन्हें यह अनुभव हुआ कि ब्रह्मा बाबा कोई साधारण हस्ती नहीं हैं। बाबा ने उन्हें बहुत प्यार दिया और पिताजी को कहा, ''जब जयपुर से अहमदाबाद व्यापार के लिए आते-जाते हो तो रास्ते में बाबा से मिलकर आया-जाया करो।'' इस प्रकार पिताजी

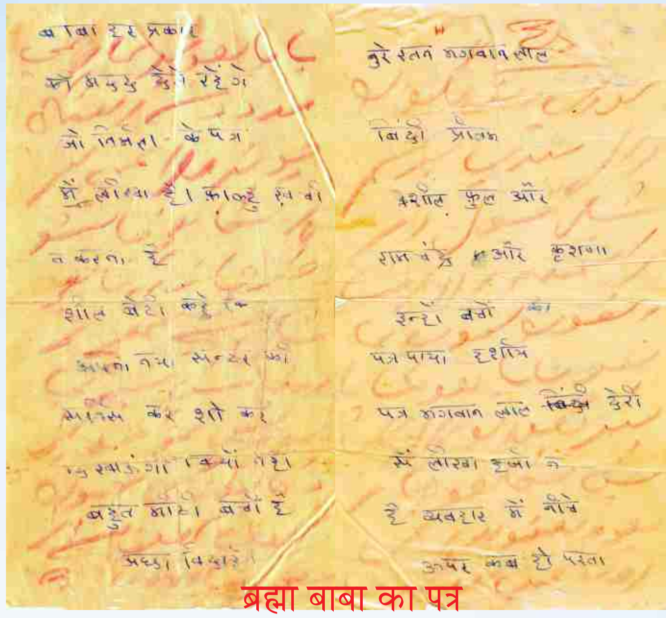

ब्रह्मा बाबा का पत्र

बाबा से 5-6 बार मिले। बाबा से उनको बहुत प्यार हो गया था। वे लगातार सुबह की क्लास में सेवाकेन्द्र पर जाते रहे। शरीर छोड़ने के दिन भी सुबह की क्लास की थी।

बाबा ने हमारे पूरे परिवार को बहुत प्यार दिया। बाबा का वरदानी हाथ सदा साथ रहा। सन् 1969 में जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तब मैं जयपुर में महारानी कॉलेज में पढ़ रही थी। मुझे पढ़ाई से और दुनिया से भी बहुत वैराग्य आया। बाबा ने इतनी शक्ति भरी कि B.A. (Hons), First Div., Second Position राजस्थान यूनिवर्सिटी से प्राप्त की, रजत पदक भी मिला! फिर बाबा की सेवाओं में समर्पित हो गयी। कुछ समय बैंक में नौकरी भी की पर दादी प्रकाशमणि जी की प्रेरणा से नौकरी छोड़कर पूरी तरह सेवाओं में लग गयी। राजस्थान में अनेक स्थानों पर सेवा की। वर्तमान समय बाबा जोधपुर में सेवा करा रहे हैं। लौकिक में हम तीन बहनें समर्पित हुई जिनमें से मैं, लौकिक बहन फूल जोधपुर में सेवारत हैं और प्रेम बहन का परिचय पहले दिया जा चुका है। साकार बाबा से मिलने गई थी तो बाबा ने मेरी उंगली पकड़ी थी (चित्र में स्पष्ट है)। अभी भी वही अनुभव हो रहा है कि बाबा उंगली पकड़कर चला रहे हैं। ❖

बीते हुए लम्हों की मधुर यादें

✲ ब्रह्माकुमारी गीता, नवसारी (गुजरात)

प्यारे साकार बाबा की पालना और प्यार की गहरी छाप मुझ आत्मा के मानस पटल पर छपी हुई है इसलिए दिल गाता है –

आ रही हैं आपकी स्मृतियाँ
मन में हो रही आप से बतियाँ,
मिल जाओ आकर एक बार फिर से,
बाबा, तरस रही बच्चों की अखियाँ।

लौकिक परिवार में 4 पीढ़ी से कोई कन्या नहीं थी। हमारे पिताजी, दादाजी, परदादाजी की कोई बहन नहीं थी और मैं भी तीन भाइयों की इकलौती बहन रही। हमारी दादी कहा करती थी कि किसी का श्राप लग गया है जो हमारे खानदान में कन्या नहीं है। रात-दिन पूजा करती थी, हे भगवान, हमें एक कन्या दो, नहीं तो हमारी डेहली (उमरा) कुँवारी ही रह जायेगी। संयोग से एक तरफ लौकिक पिताजी को ज्ञान मिला और दूसरी तरफ मेरा जन्म हुआ तो परिवार में जैसे बहुत ही खुशियाँ मनाई गई।

यज्ञ से गई हुई आत्मा

एक बार जब साकार बाबा दिल्ली में आये तो माताजी-पिताजी (कला माता-त्यागी जी) मुझे भी गोद में लेकर गये। बाबा सबसे मिल रहे थे। जब माता जी की बारी आयी तो पहले बाबा ने मुझे गोद में लिया। बाबा ने मेरी माताजी को कहा, ''बच्ची, ये बच्ची तो यज्ञ से गई हुई आत्मा है, आपके पास बाबा की अमानत है, बड़ी होकर यज्ञ की ही सेवा करेगी।'' जानीजाननहार बाबा ने ऐसी भाग्य की रेखा खींच दी जो बचपन से ही बहनों के साथ सेवाकेन्द्र पर ही रहकर पढ़ाई की और ज्ञान वरदान रूप में सहज ही प्राप्त हुआ। पढ़ाई के पश्चात् यज्ञ में समर्पित हुई।

अलौकिक पिता का प्यार

एक बार पार्टी के साथ मधुबन गये। हम 5-6 बच्चे दोपहर में पहाड़ियों पर घूमने निकल गये। चेरी तोड़-तोड़ खाते गये और पहाड़ियों पर चढ़ते गये। अचानक काले घने बादल छा गये तो हम पाण्डव भवन की ओर वापिस चल दिये लेकिन रास्ते में ही खूब जोरदार बरसात शुरू हो गयी और हम भीग गये। हम सब घबरा रहे थे कि इस हालत में माताजी हमको देखेगी तो डांट पड़ेगी। हम डरते-डरते जैसे ही पाण्डव भवन के गेट से (पीछे का गेट हुआ करता था) अन्दर आये तो चौक में बाबा, पीछे हाथ किए टहल रहे थे। बाबा की नजर हम पर पड़ी। बाबा ने इतने प्यार से हम सबको बुलाया कि हमारा डर खत्म हो गया। बाबा हम सभी को कमरे में ले गये और एक बहन को कहा, पहले इन बच्चों के कपड़े बदलवाओ, ठंडी लग जायेगी। बहन (मुझे नाम याद नहीं है) ने हमारे माप के फ्राक दिये, हमने कपड़े बदले, बाबा ने हमारे लिए गर्म दूध मंगवाया और दूध पिलाकर वहाँ ही रजाई ओढ़ा कर सुला दिया। कहाँ लौकिक मात-पिता का डर, कहां अलौकिक पिता का प्यार। आज भी याद करते दिल गद्गद् हो जाता है, नयन सजल हो जाते हैं।

चुम्बकीय आकर्षण

जब भी मधुबन जाना होता था तो बाबा के पास जाने की बार-बार खींच होती थी परंतु लच्छू दादी हमें रोकती थी कि बाबा आराम कर रहे हैं, अन्दर नहीं जाना। हम नादान थे, मन में ऐसा भाव जागता था, हमारा भी तो बाबा है, हमको ना क्यों बोलते हैं। फिर भी बाबा के प्रति बहुत आकर्षण होता था और हम लच्छू दादी से नजर बचा कर चुपचाप दबे पांव बाबा के कमरे में घुस जाते थे। छोटे होते भी इतनी समझ जरूर थी कि बाबा को डिस्टर्ब नहीं करना है। बाबा के विश्राम में खलल न पहुँचे इस बात का ध्यान रखते हुए जिस चारपाई पर बाबा विश्राम करते थे (बाबा के कमरे में अभी भी है), उसके नीचे बैठ जाते थे, आवाज नहीं करते थे। वहाँ एक अद्भुत

शांति मिलती थी। हमारी किसी प्रकार की भी आहट न होने पर भी, बाबा की आंखें बंद होते हुए भी, ना जाने कैसे बाबा जान जाते थे, थोड़ी देर पश्चात् ही खटिया के नीचे हाथ करके कहते थे, हाँ बच्ची, आ गयी, हम आश्चर्यमिश्रित खुशी से बाबा का हाथ पकड़ लेते थे और बाबा हमें अपनी खटिया पर ऊपर अपनी रजाई ओढ़ा कर सुला देते थे।

बचपन से ही किसी लौकिक संबंधी के यहाँ या किसी शादी आदि के कार्यक्रम में हम नहीं जाते थे परंतु छुट्टियों में सीधे मधुबन जाने की तैयारी रहती थी। रेलवे में विद्यार्थियों को टिकिट पर छूट मिलती थी तो स्कूल से लिखवा कर ले आते थे। सिर्फ 10-12 रुपये लगते थे आबू तक।

करेले की सब्जी बन गई मीठी

एक बार मधुबन के प्रांगण में बाबा ने मुझे बुलाया, कहा, बच्ची, आज दोपहर को 12 बजे भोजन पर आना। हम खुशी-खुशी से माताजी के पास कमरे में गये और बताया, आज बाबा ने 12 बजे बुलाया है। नयी फ्राक पहनी। उस समय मुझे घड़ी में समय भी ठीक से देखना नहीं आता था इसलिए बार-बार सबसे पूछती थी, 12 बज गये क्या? इतना रूहानी आकर्षण था बाबा में जो छोटे बच्चों को भी खींच होती थी। आखिर 12 बजे और हम बाबा के पास पहुँच गयी। बाबा पटले पर बैठ भोजन करते थे। बाबा ने मुझे बड़े प्यार से अपने पास बिठाया और भोजन की थाली परोसवायी। उसमें सब्जी थी करेले की जो मुझे बिलकुल ही पसंद नहीं थी परंतु इतनी समझ थी कि बाबा के पास से उठकर भागना नहीं है या नखरा नहीं करना है। प्यारे बाबा ने बड़े प्यार से कहा कि बच्ची को बाबा अपने हाथ से गिट्टी खिलायेगा और बाबा ने मुझे करेले के साथ रोटी खिलायी। सच, मुझे वह दिन याद है, वह करेले की कड़वाहट भगवान के हाथों से मिठास में बदल गयी और उस दिन से करेले की सब्जी मेरी मनपसन्द सब्जी हो गयी।

नहीं सूखते थे आँखों के आँसू

कभी 15 दिन, कभी महीना भर मधुबन में रहने के पश्चात् जिस दिन लौकिक घर लौटना होता था तो मन को अच्छा नहीं लगता था इसलिए हम कहीं भी छिप जाते थे। माता-पिता हमें ढूंढ़ कर बाबा के पास ले जाते थे क्योंकि हम रोते थे और जिद्द करते थे कि हमको घर वापिस नहीं जाना है, यहाँ ही बाबा के पास रहना है। बाबा बहुत प्यार से दुलार देते हुए समझाते थे, बच्चे, तुम्हें बड़े होकर बाबा की सेवा करनी है। हम कहते थे, जी बाबा। बाबा कहते थे, बच्चे, पढ़ोगे-लिखोगे तो बड़ों-बड़ों को ज्ञान सुनाओगे इसलिए सेवा करने के लिये तुम्हें अभी पढ़ना है। बाबा तुम्हें पढ़ने के लिये होस्टल में भेज रहा है। छुट्टियाँ होंगी तो यहाँ अपने घर बाबा के पास तुरंत आ जाना। ऐसे प्यार-प्यार से समझाकर बाबा हमें भेजते थे परंतु बाबा का वह रूहानी प्यार दिल को इतना स्पर्श करता कि दिल्ली तक भी हमारी आँखों के आँसू नहीं सूखते थे। दिल से आज भी निकलता है,

जितना तुमने प्यार किया है, इतना प्यार करेगा कौन?
जितना तुमने दुलार दिया है, इतना दुलार देगा कौन?

अंत में इतना ही कहूँगी, 5000 वर्ष के बाद सिर्फ एक ही ब्रह्मा हुआ करते हैं जिनकी मुसकान हर मानव पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है, जो हर मानव को देव बनने का गौरव प्रदान करते हैं। दिल के विशाल, तबियत के खुशहाल, संगमयुग की यात्रा को समाप्त करने पर भी वे जागती ज्योति की तरह पथ प्रदर्शक बन समस्त विश्व को प्रकाशमान कर रहे हैं। ऐसी महान विभूति प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को शत शत प्रणाम, कोटि-कोटि श्रद्धा सुमन अर्पित।

इत्र से कपड़ों को महकाना बड़ी बात नहीं, मज़ा तो तब है जब खुशबू आपके किरदार से आये

पहली मुलाकात में ही बाबा ने अपना बना लिया

✲ ब्रह्माकुमार बसवराज राजऋषि, हुबली (कर्नाटक)

मुझे विद्यार्थी जीवन से ही भगवान की बहुत खोज रही। इसके लिए कई गुरु किये, सेवा की, व्रत किये पर कहीं भी भगवान नहीं मिले। शिव का भक्त था अत: शिव की महिमा सुनने के लिए प्रवचनों में, भजनों में, यात्राओं पर जाता रहता था। एक बार अखबार में पढ़ा कि ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ से एक कार्यक्रम का आयोजन है जिसका विषय है, 'कैसे भगवान को पा सकते हैं?' मैंने सोचा, यह तो मेरे काम का विषय है इसलिए जाना चाहिए। रात को 8 बजे अखबार में पढ़ा और रात दस बजे पहुँच गया। देर होने के कारण प्रवचन पूरा हो गया था। वहाँ की निमित्त दादी हृदयपुष्पा जी ने अगली शाम आने को कहा। अगली शाम निश्चित समय पर पहुँच गया पर मुझे ये सब क्रिश्चियन मिशन वाले लोग लगे क्योंकि हिन्दुओं की तरह तिलक बहनों ने नहीं लगा रखा था और सफेद पहनावा भी क्रिश्चियन लोगों की तरह लगा। मैंने दादी के सामने, ''आप किसका प्रचार करते हो? आपको मकान का किराया कौन देता है? सम्भाल कौन करता है?'' आदि अनेक सवालों की झड़ी लगा दी। 'सात दिन आकर सारा ज्ञान समझो बाद में सब कुछ बतायेंगे', दादी ने ऐसा कहा। धीरे-धीरे सात दिन का कोर्स पूरा होते-होते निश्चय पक्का हो गया कि भगवान सृष्टि पर आ गये हैं। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में स्वयं भगवान ज्ञान देते हैं, यह सत्य बुद्धि में बैठ गया।

ब्रह्मा बाबा के तन में ही क्यों?

ईश्वरीय ज्ञान में निश्चय होने के बावजूद मुझे यह सवाल बहुत बुरी तरह परेशान कर रहा था कि परमपिता परमात्मा शिव, ब्रह्मा बाबा के तन में ही क्यों अवतरित हुए? कर्नाटक में तो बहुत महात्मा हैं, त्यागी, मठाधीश, पीठेश्वर हैं जबकि ब्रह्मा बाबा तो वैष्णव थे। जगतगुरु तो ब्रह्मचारी होता है पर ब्रह्मा बाबा तो गृहस्थी थे। गुरु लोग शैव होते हैं, ईश्वर के भक्त होते हैं परन्तु ब्रह्मा

बाबा तो व्यापारी थे। संन्यासी तो त्यागी-तपस्वी होते हैं जबकि ब्रह्मा बाबा तो परिवार वाले थे। मुझ ब्रह्मचारी आत्मा को छोड़कर इस आत्मा के तन में भगवान क्यों आये? यह बहुत बड़ा प्रश्न मन को बहुत कचोट रहा था। इसका कहीं हल नहीं मिल रहा था। बहनों से भी कुछ पूछ नहीं पा रहा था, भय था कि कहीं मेरा सेवाकेन्द्र पर आना-जाना ही बंद न करवा दें। इसलिए मैं कुछ ही दिनों के बाद माउण्ट आबू गया। कुमार होने के नाते मुझे शीघ्र यह मौका मिला, ऐसा मुझे बाद में पता चला।

मुरली द्वारा मिले सभी प्रश्नों के उत्तर

माउण्ट आबू रात को देरी से पहुँचा इसलिए उसी समय बाबा से रूबरू मुलाकात नहीं हुई। प्रात: मुरली क्लास में मुरली सुनी। मैंने वह तिथि डायरी में नोट कर रखी है क्योंकि मुझे जो पूछने थे उन सब सवालों के जवाब उस दिन की मुरली में ही आ गये। मुझे आश्चर्य लगा, सभी प्रकार के संशय उस दिन की मुरली सुनकर मिट गए। मुरली में आया, चूँकि यह ज्ञान प्रवृत्ति मार्ग के लिए है इसलिए शिवबाबा को गृहस्थी तथा वानप्रस्थ अवस्था वाले तन का ही आधार लेना है। यह सुनकर मन में तुरन्त प्रश्न आया कि परिवार वाले के तन का आधार क्यों लिया? फिर मुरली में आगे आया, वही नारायण बनने वाला है। भगवान

किसी मानव को पूछकर किसी के तन में आयेंगे क्या? अगर शिव बाबा किसी संन्यासी के तन में अवतरित होते तो तुरन्त ज्ञान को फॉलो करने वाले भी तो चाहिएँ, जंगल में क्या कोई फॉलो करेगा? मुरली सुनकर चिन्तन चला कि बिना पूछे ही हर सवाल का जवाब दे दें, ऐसा काम सिर्फ और सिर्फ भगवान ही कर सकते हैं। आमतौर पर माँ भी ऐसा कर सकती है लेकिन वो केवल स्वयं के बच्चे के लिए ही कर सकती है, हरेक के लिए नहीं।

बाबा ने पूछा, 'क्या चाहिए?'

बाबा के कमरे में बाबा से सम्मुख मिलन हुआ तब ये सब सवाल और मन की उलझनें उन्हें बतायी, तो परमात्मा शिव के रथ अर्थात् ब्रह्मा बाबा भी खुले दिल से हंसे। ब्रह्मा बाबा ने मुझसे पूछा, ''क्या चाहिए?'' मैं हिन्दी और इंग्लिश अर्थात् हिन्दलिश बोलता था। भाषा को न समझना भी एक बहुत बड़ी समस्या है। फिर भी बाबा को बोला, ''जो इच्छा थी वो तो मिल गया, बाबा, अब कुछ नहीं चाहिए।'' पहली मुलाकात में ही बाबा ने मुझे अपना बना लिया। फिर तो मैं भक्ति से सम्बन्धित विभिन्न सवाल बाबा को खत में लिखता और सप्ताह में ही प्रत्युत्तर पाता। ज्ञान और योग में निश्चय होने के साथ-साथ मुझे ब्रह्मा बाबा की कार्यप्रणाली ने बहुत आकर्षित किया। करोड़पति होने के बावजूद बाबा का झट से धन का त्याग, ईश्वर से प्रेम होने के कारण बाबा की तपस्या, ईश्वर के प्रति उनकी लगन, परिवार वाला होते भी पुरानी दुनिया का त्याग, मानवता की सेवा की लगन, बंधु, गुरु, सामाजिक गौरव का त्याग – ये सब बातें बहुत प्रेरणादाई लगीं। मैं सोचने लगा, कुमार होने के बावजूद मैं ऐसा क्यों न बना?

त्याग-तपस्या का मिसाल खड़ा करने की लगन लगी

''एक बाप दूसरा न कोई'' मुझे बाबा की यह शिक्षा बहुत पसन्द आई। बस, बाबा ही मेरा जीवन है। ब्रह्मा बाबा के त्याग और तपस्या को देख चिन्तन चलता था कि कुमार होकर भी त्याग-तपस्या का कोई मिसाल खड़ा न करूँ तो परमात्मा के प्रति मेरी तड़प के मायने ही क्या? जो काम एक गृहस्थी कर सकता है, वो मैं कुमार क्यों नहीं कर सकता? पढ़ाई पूरी होने के बाद एनवायरमेन्टल साइन्टिस्ट की बहुत अच्छी नौकरी लग गई, तनख्वाह भी बहुत अच्छी थी। मेरी पसंद भी कुछ ऐसी ही नौकरी की थी अतः स्वीकार कर ली। बाबा ने भी यही सुझाव दिया था। मैं बाबा की तरह करोड़पति तो था नहीं इसलिए इसी पूरी की पूरी तनख्वाह को राजस्व अश्वमेध यज्ञ में सफल करके शिवबाबा की लिस्ट में आगे से आगे नम्बर लेने का भरपूर प्रयास किया। यह भी पक्का किया कि शरीर की हड्डी-हड्डी यज्ञ में सफल करना, सिर्फ दधीचि ऋषि का ही गायन नहीं है, मेरा भी है। इसी सेवा क्रम में भगवान के नाम पर ज्यादा से ज्यादा जमीन सरकार से खरीदी। येल्लापुर में सिर्फ एक हजार रुपये में दस एकड़ जमीन खरीदकर वहाँ पर बाबा का सबसे पहला तपस्याधाम बनवाया। वहाँ ही सर्वप्रथम मूल्य शिक्षा सेवाकेन्द्र बना जहाँ आज तक निरंतर सेवाएँ चल रही हैं।

धार्मिक सम्मेलन में एक जगतगुरु के साथ अमेरिका जाना हुआ। न्यूयार्क, बोस्टन, मैरीलैंड आदि स्थानों पर बाबा का झण्डा लहराया। सबसे पहले मेरे द्वारा ही विश्व नव-निर्माण पत्रिका बाबा ने निकलवाई। बाबा अभी भी बहुत सेवा करवाते हैं। स्वर्ग को प्रदर्शित करती एक भव्य फोटो वाली किताब भी बाबा ने बनवाई। स्पोर्टस विंग में क्षेत्रीय संयोजक की हैसियत से सबको साथ रखकर सेवायें देता हूँ।

मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि बाबा ने जो बोला वह करना ही है। बाबा को अर्थात् बाबा की मुरली को शत प्रतिशत फॉलो करो तो भाग्यविधाता स्वयं ही बन जायेंगे। 'एक बाप दूसरा न कोई' यह धुन लग जाने से कल्प-कल्प की कमाई जमा हो ही जायेगी लेकिन 'अब नहीं तो कब नहीं' यह ज़रूर याद रखना है। ❖

बाबा से सीखी हुई **तीन बातें**

❇ ब्रह्माकुमारी लीला बहन, चेन्नई

हमारे घर से सबसे पहले गोपी बहन (जो पठानकोट में सेवारत थी) ओम मण्डली में जाने लगी। मैं भी बाबा ने जो स्कूल खोला था उसमें पढ़ी थी पर पिताजी का बन्धन होने के कारण मुझे वापस घर में आना पड़ा। हम चार बहनें थीं, गोपी, परमेश्वरी, लीला (मैं) तथा लक्ष्मी। हम चारों ही ज्ञान में चली। भाई तीन थे। उनमें से गोपाल दादा (गीता बहन ओ.आर.सी.के युगल) परिवार सहित ज्ञान में चले।

विभाजन के बाद हमारा सारा परिवार मुम्बई में आ गया। मैं जहाँ रहती थी वह बड़ी सोसायटी थी। उन दिनों लोगों में भ्रान्तियाँ बहुत थीं कि ब्रह्माकुमारी वाले जादू करते हैं, सुरमा डालते हैं आदि। मैं सबको समझाती थी कि जादू आदि कुछ नहीं है और गामदेवी सेन्टर लेकर जाती थी। बाबा ने गामदेवी सेन्टर का स्वयं उद्घाटन किया था, फ्लैट रमेश भाई ने दिया था। बाबा साल में दो बार मुम्बई आते थे। एक दिन बाबा को थोड़ा बुखार था। बाबा लेटे हुए थे। मैं मिलने गई, बाबा को यज्ञ-सेवा देने लगी तो बाबा के हाथ को हाथ लग गया। मैंने कहा, बाबा आपको तो बुखार है, क्लास में आएंगे? बाबा ने कहा, बच्ची, मैं एक बार नहीं आऊँगा तो ये सब लोग बहाना करेंगे कि बाबा भी तो नहीं आए थे, मैं नहीं आया तो कौन-सी बड़ी बात है।

जब क्लास चल रही होती थी, तो कोई आत्मा ऐसी होती थी जो क्लास के सारे भाई-बहनों के पास से गुज़रकर आगे आकर बैठती थी। तब बाबा कहते थे, तुम्हारे आगे आने में कितनों को तकलीफ हुई, किसी को पांव लगा, किसी को हाथ लगा। बच्ची, आगे आना हो तो जल्दी आकर बैठ जाओ। कहते हैं, हनुमान जुत्तियों में आकर बैठता था। इसका अर्थ क्या है? जहाँ जगह मिले वहाँ बैठ जाओ।

जब बाबा मुम्बई में आते थे तो सबको ब्रह्माभोजन खिलाते थे। जब तक सबको भोजन की थाली ना मिल जाए, बाबा भोजन शुरू नहीं करते थे। प्यारे बाबा की भावना होती थी कि एक भी मेरा बच्चा रह न जाए। एक-एक बच्चे को बाद में मुख में गिट्टी खिलाते थे। मैंने भी कई बार गिट्टी खाई। बाबा से सीखी हुई तीन बातें मुझे पक्की हैं, इधर की बात उधर नहीं करो, अन्न की शुद्धि और ब्रह्मचर्य की धारणा। ❖

खुशखबरी

ज्ञानामृत पत्रिका के पुराने अंकों का अध्ययन करने के इच्छुक भाई-बहनों के लिए खुशखबरी है कि gyanamrit.bkinfo.in लिंक से जनवरी, 1980 से दिसम्बर, 1980 तक की पत्रिकाएँ नेट पर उपलब्ध हैं। इससे आगे के अंक भी धीरे-धीरे उपलब्ध किए जाते रहेंगे..

– सम्पादक

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125